

I

318

1871

मः पु
ति
१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥
वतिं पंचादिवृद्धासि कांसाह स्रविष्क मातरंगवतुजांसाह स्रकाठीग ॥ साहस्रायुग कागिलाक
निवयावृद्धालयनि कलसाह स्रविष्क मातरंगवतुजांसाह स्रकाठीग ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥
कसिं समयरागवान्दवषुगयतिं लव विहजति स्म ॥ संधर्मायां दवसरायां मरुतादि कसंधन
साध मरुताव वाचि सत्वसंधन च गद्वाना मिदं लसाध गतु यत्पूरगवान्पूरुफ ॥ वासन
निषयउष्ट्रीषयवलाकिं नामसमाचि स्रमापयते स्म ॥ समनं कजसमापयत्पूरगवताष्ट्रीष
म ॥ दिमा निमं न पुदानि नि ॥ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥
नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥ नमो भगवते श्रीकृष्णाय नमः ॥

गु
१

वानरवत् सपर्वदा रिक्कुरिक्कुल्लपासकापासिकावाचिसत्त्वा महासत्त्वा अर्जुना महाजाजान अर्जुम
हाजाजकायिका अदवपुगान् यावदक निष्ठा अदवपुगान् यावदक निष्ठा अदवपुगान् सन्निपतिता
सन्निषर्द्ध सर्वसाङ्गिः स्थपयित्वा अकृदवा मा मिन्दुमन्तयवाचन ॥ यकश्चिन्महावाचिसत्त्वा
महासत्त्वाः रिक्कुरिक्कुल्लपासकापासिकाकलपुगावाकलइ हि नजावादेवपुगावादेवकन्यावायः
ॐ मां सर्वत आगताष्टौ सितगुपगाना मापजाङ्गितामाहाप्रसंगीजाम्द हीष्यति ध्वजयिष्यन्ति वा
ययीष्यति पर्यवाप्या क्रियन्ते विरुजलसंप्रकाशयिष्यन्ति या निसामनसिकजीष्यन्ति महाप्र
संगीजाम्द न विज हि नारु विष्यन्ति ॥ तथा माजायामाजकायिकावा अदवाजं नलपस्यति ॥ तत्क
म्बहमासु अहिनेः कलपुगैः कलइ हि न्नुहि अर्जुपगुन्यगत्त विधि नारु विष्यन्ति वेदनासंज्ञासं

स्वाजा विज्ञानं पुन्यमेव स्वचिद्विगार विष्णुति ॥ वदना संज्ञासत्त्वा ला विज्ञानं पुन्यमेव स्वचिद्विगार वि
 ष्यति ॥ तत्कस्य हताः ॥ नहि पुन्यताया मयता जलर गनानि मिमिता मानि ॥ मिहू ज्वता लंजर गनाप
 लिहित ज्वता जलर ग ॥ उवयसु समस्त संध्याया यग नपुगी सुसमस्त्या द पुन्यमेव स्वचिद्वि
 गार विष्णुति ॥ उवंपा जमिता सत्त्वा रिज्ञापना ॥ धना ज्वता समाप हि पुन्यमेव स्वचिद्विगार विष्णुतिः ॥
 उवंसर्व पुन्यता सर्व समाधिः सर्व धजली मयसु मूपस्थ न सम्यक् हल ज्वता द न्दिय वलवा धज
 मार्ग पुन्यमेव स्वचिद्विगार विष्णुति ॥ उवंद मवलवे धजया पुति संविदा द लि कवू धर्म पुन्यमेव
 स्वचिद्विगार विष्णुति ॥ या वसु सर्वा का जलता पुन्यमेव वूल पूरेः कूल इ हि र् रित्व चिद्विगार विष्णुति ॥
 तत्कस्य हतासु धा हि पुन्यतायां मयता लंजर गनानि मिमिता मानि मिहू ज्वता लंजर ग ॥ नापु लिहित

मप्रलिहित ऊवतालंजरे ॥ गलस्यहमा रु अहिगणो सरा वान संवीद्यत ॥ यनावगात्रं लर गयगुवाव
तात्रलरं ॥ यद्यदावगात्रं लरं ॥ ॥ ॐ गिमहाप्रुमिगिजायां समुदयप्रह्लापात्रकुनि ॥ ॥

नखत्रपूनः महावाचिसत्तागणांकुलपूगां कूलइहिरू अं वामनूषा नां वगात्रलरं प्यं ॥ ग ॥
नेः कूलपूगेः कूलइहिरू रि ॥ सर्वसत्ता नामनिकमेशिकत्रलमदिनापका एविमान् पलरुयाग
ननचग कोठिक कूलपूगा वा कूलइहिरू गीवा विषमापत्रि हात्रलं कालं कविष्यं ॥ गलस्यह
ता ॥ गहिने ४ कूलपूगेः कूलइहिरू रि ॥ गमहाप्रुमिगिजायां चत्रि ४ सर्वसत्ता ४ संन्यकपविचर्या
याउपमिदिता ॥ ये वाकोकचरु महाजाऊकायिक दवपूगे विरू गिहा रुमु महासा रुमु लाक अगो
गायतिं लवायामे वातु विगेया निर्वानत्रमिवापत्रनिर्मितवसवर्त्ति वाउरु कायिके वातु रुपूजा

मः ७
२

हिने वापुः पारयये वाः यावदक निवे वाद वपुः जन्तु जायां संभक्तं वाः विरुमत्यादि नं नवयंस
वर्तन भगता पूष सितात पगना माप जाति नाम हापुः गिजा भजनी पुत्या ना कु हिता न भ विता न
वायिता न पर्यवा फाद वपुः वि यं महापुः गिजा ५५ त व्या ड ग हिता व्या भज यित व्या वा व यित
व्या पर्यवा फ वा या नि ५५ मन सि क रु व्या सर्व रु गा वि रु ना वि ज हिता ४ १ ७ ति महापुः
गिजा यां समुद मा न्य य हान ॥ ॥ जतः पजं वा वि सत्या कूल पूग वा कूल इ हिता वा ७ मां स वन
भगता पूष सितात पगना माप जाति नाम हापुः गिजा म् इ हाप्यति भज यिष्यं नि वा वयीष्य नि
पर्यवा पत्य निः या नि ५५ मन सि क विष्यति न विज हिता ४ सर्वा का ज रु गा वि रु न महापुः गि
जा हा व यिष्यं नि ॥ नरवत्पुनः महा वा वि सत्या तेषां कूल पूग मां कूल इ हि रु लां वा पु न्या ग ल गाना मांः
ना

गु ३

नरस्यका गगना नावांउ तपथ गगानां वाहय माः संकत त्व वाहयिष्यंति ॥ नरस्यका सुपाहिने ॥
पुलपने ॥ कूल इ हि नृतिष्व नृधम पुन्यता सुरा विता नृपलंर यागन व हिर्जा पुन्यता सुरा
विता नृपलंर यागन नृधम सव हिर्जा पुन्यता सुरा विता नृपलंर यागन या वदराव
सराव पुन्यता सुरा विता नृपलंर यागन नृधम सव हिर्जा पुन्यता सुरा विता नृपलंर या
गन या वदराव सराव पुन्यता सुरा विता नृपलंर यागन ॥ नृधम सव हिर्जा पुन्यता सुरा विता नृपलंर या
साहजुमहासाहजुलाक धमो यवतु महाजाड कादय प्रग साय सिं धमो सा सुरा विता निर्मा
लजता य ४ पत्र निर्मित व सव हिर्जा या यावतु पुन्यता सुरा विता नृपलंर यागन या वदराव सराव ॥
वयं रगव स्रवां कूल पूग धं कूल इ हिर्जा धमो यवतु स निर्मित कावत लगु किं संवि धमो यम ४

य ॐ मा सर्वतथा गता कृषिना तपुना नामोपजा विनाम हापुन्य गिजा म्कृहीष्यति धन विषयति
 वाचया विषयवापस्यति या नि ॥ धन मनसि कविष्यति जिवित हिना भवत विषय कि सर्वह
 ता विज्ञेन ॥ गत्कस्य हताः तथा हि एग वल वा विस्तृत्य म हा सत्व मागम्य निज या उ कि यन् ॥
 निर्यरु निर्यमलो का जस्रज का याम नृष्य हा विदु स म्दु वा उ प स र्ग ॥ सर्वेषु कि यन् ॥ वा
 विस्तृत्य म हा सत्व मागम्य द धनां कृ भला नां कर्म प धना ला क प्रा इ रा वा रु व ति ॥ चतुर्ल
 धनानां ला क प्रा इ रा वा रु व ति ॥ चतुर्ल म पु मा ली नां ला क प्रा इ रा वा रु व ति ॥ चतुर्ल म मान
 धन मा प र्ति नां ला क प्रा इ रा वा रु व ति ॥ दान पात्र मिता यां ला क प्रा इ रा वा रु व ति ॥ नील पा
 न मिता यां ला क प्रा इ रा वा रु व ति ॥ जाति पात्र मी ता यां ला क प्रा इ रा वा रु व ति ॥ वीर्य पात्र मि

लोके
तायां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ अन पात्र मि यां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ पुत्रा पात्र मि तायां पाइ लावा
रु वंति ॥ ॐ ॥ अस्म शुभ तायां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ वहि द्या शुभ तायां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ ॐ
॥ अस्म वहि द्या शुभ तायां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ यावद लाव स लाव शुभ तायां लोक पाइ लावा रु वं
ति ॥ चतुर्लु सूर्य पस्थनां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ चतुर्लु मृद्धि पादानां लोक पाइ लावा रु वंति ॥
पक्षि द्या लो लोक पाइ लावा रु वंति ॥ पक्षि नां व जानां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ सफा नां वा अंग
नां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ आर्या वागमागम लोक पाइ लावा रु वंति ॥ चतुर्लु माय्य सत्या नां लो
क पाइ लावा रु वंति ॥ चतुर्लु मप्रमा लो नां च लु मरि ह्य लोक पाइ लावा रु वंति ॥ दश जंतु भाग र्क वला
नां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ चतुर्लु वे ज प्रद्या नां लोक पाइ लावा रु वंति ॥ यत सद लो पु ति सं वि दानां लोक

पाइला वार वंति ॥ आठे निऊ वड्ठ धर्मा नां लाके पाइला वार वंति ॥ ^त न ~~न~~ पांस माधी नां लाके पाइला वार
वंति ॥ न न के र्वा धज नी म र्वा नां लाके पाइला वार वंति ॥ स र्व ह्म गा यां वा चिस त्व माई स्य लाके पाइला
वार वंति ॥ ॥ न नः पत्रं वा चिस त्व माहा स त्व मा ग म्य क ति य म ह्म अ कू ला नि पु ह्म य न् ॥ ग्रा म न म
ह्म अ कू ला नि पु ह्म य न् गृ ह्म प ति म ह्म सा कू ला नी पु ह्म य न् ॥ व कु व र्ति म ह्म अ कू ला नि पु ह्म य न् ॥ व तु
मा हा जां उ का यि का द व पु ग पु ह्म य न् ॥ उ वं गाय तिं अ या मा सु पि ता नि मा ल ज न यः पत्र नि मि त व
स व र्ति ना उ क का यि का उ क पु ज हि ता उ क पा र्ष या म हा ग्रा म अ या व द क नि सा न्ध द व पु ग ला के पु
ह्म य न् ॥ ॥ पु न ज प स वा चिस त्व माहा स त्व मा ग म्य अ ता प ति र्द ल पु ह्म य न् ॥ अ न ना प न्नः पु ह्म य
न ॥ उ वं स कं दा ग म मि र्द ल न ना ग म मि र्द ल न ह्म म ह्म ला के पु ह्म य न् ॥ पु ह्म क वा चि पु ह्म य न् ॥ पु न ज

७२

पञ्चाधिसत्त्वमहासत्त्वमार्गम्यसत्त्वपादः पुद्गायनः ॥ बृद्धकृतपविशुद्धिः पुद्गायनः ॥ तथैवगार्ह
नसम्बद्धवक्ष्यापुद्गायनः ॥ धर्मवक्तुपुद्गायनः ॥ बृद्धजलपुद्गायनः ॥ धर्मजलपुद्गायनः ॥ सद्य
जलपुद्गायनः ॥ नमनमहापुद्गायनः ॥ गिजापयार्थनवाधिसत्त्वमहासत्त्वसमान्वासजगंधर्वयदनाद
सगज्जुक्तिकिंर्लजमहाजगमन्वामन्वाजलादनजकावजलजुक्तिंसंविधमन्वा ॥ नवंमन्वा
गवान्पुद्गायनः ॥ सकुदवानामिनुमनदवावत ॥ नवंमनमहावाधिसत्त्वमार्गम्यनिजय
गिर्व्यक्तानियमलाकगतयतुक्तियनदवदापिउमन्वादापिउतपुद्गायनः ॥ सर्वय
क्तियनवाधिसत्त्वमहासत्त्वमार्गम्यदधनांकुला नांकर्मपधमांलाकपुद्गायनः ॥ दधमांलाकमिना
नांवाधिसत्त्वमिनामपुद्गायनः ॥ दधमांलाकमिनामपुद्गायनः ॥ दधमांलाकमिनामपुद्गायनः ॥

५७

五

५॥ अं सर्वकालं तायां वाचिसत्त्वमहासत्त्वमार्गम्यपुद्गायन् ॥ कृषियमहासालकूलाविग्राहकनम
हा ॥ लकूलाविगृहपतिमहासालकूलाविवाचिसत्त्वमहासत्त्वमार्गम्यलाकपुद्गायन् ॥ वज्रव
र्हिजायकूलानिलाकपुद्गायन् ॥ वतुमहाजाजकायिकादेवपुगायावदकनिष्ठादेवपुगाः पुद्गा
यन् ॥ २॥ श्रीपतिरुलंशुतापत्र ॥ अयं सकृदागमिरुलंशुनागमिरुलंशुनागमिरुलंशुत्वमह
॥ लाकपुद्गायन् ॥ पुण्ड्रकाचिपुण्ड्रकवृद्धा लाकपुद्गायन् ॥ वाचिसत्त्वमहासत्त्वमार्गम्यसत्त्व
पवित्राफः पुद्गायन् ॥ वृद्धकुरुपवित्रुद्धि ॥ पुद्गायन् ॥ गङ्गागता ॥ रुन्मयकसंवृद्धा लाकपुद्गाय
न् ॥ धर्मवक्रपुर्वरुनं लाकपुद्गायन् ॥ वृद्धवत्सधर्मवत्ससद्यवत्सवाचिसत्त्वमहासत्त्वमार्गम्य
लाकपुद्गायन् ॥ गङ्गाहिसमहावाचिसत्त्वमहासत्त्वसदेवमान्वास्त्यनकरुव्यागुर्करुव्या

৩২

मानयितव्या पूजयितव्या सतत नमिन्नाश्री न कावचलगुफाः संविभक्त्या ॥ ६० ॥ मांसर्वत आगताष्टी
षसितातपुगानामाप जातितामहापुतिजिजामहाविद्या अत्रयत ॥ तदो शिकमहावाधिसत्त्वा सत्क
रूपाय नमः ॥ अरू व्यामानयितव्या मन्यतया वाधिसत्त्वमहासत्त्व सत्क रूपाय मानयितव्यं पूजयितव्यं मन्य
ततस्यां वाधिसत्त्वमहासत्त्व सत्क रूपाय देवदेव नारायण सत्क रूपाय सतत नमिन्नाश्री न कावचलगुफि सत वि
भक्त्या ॥ यच्च महावाधिसत्त्व ॐ मां गिरा हस्त महासा हस्त लोक अगु अवक वृद्धा पत्रिपूर्णा ॥ तद्यथा
पिताममहावाधिसत्त्व ॐ कृवन्मानुव नन्वावे भूव नंवा भव नन्वांतीव नन्वा ॥ कश्चिदेव कूल
पूजावाकूल इति तावा सत्क रूपाय नमः ॥ यत्पुत्रमविश्रुत्यादिकं वाधिसत्त्वमहासत्त्वम
विप्रहिषहीः पात्रमिताहिः सत्क रूपाय नमः ॥ यत्पुत्रमविश्रुत्यादिकं वाधिसत्त्वमहासत्त्वम

तत्कल्पयन्ता यद्गुणं प्रपन्नं यत्नि ॥ तथा हि समस्त वाचि सत्त्वः अवकपुत्र कवृद्ध मागम्य वाचि सत्त्वसु
 भागता अर्हन्तः सम्यक् वृद्धा ला कपुत्रा यन्तः सा कर्हि महा वाचि सत्त्वसद्वयमानुषा सुयल लोक नवा
 चि सत्त्व महासत्त्व ॥ तत्कल्पा गुण कर्हि व्यामान यित्वा; सतत समित्वा तत्र का वयल गुणि संवि
 धातया ॥ ॥ ॐ नमो महापुत्र गिजायां निजा धर्मा ज्ञान काति ॥ ॥ ॐ नमो महापुत्र गिजाय ॥

नमः सफा नां सम्यक् वृद्ध काठिनां ॥ नमो मेति यपु मृद्यानां वाचि सत्त्वा नां महासत्त्वानां ॥ नमः सर्ववृद्ध
 वाचि सत्त्वा नां महासत्त्वानां ॥ नमः अवक सत्त्वानां ॥ नमः लोक जर्हता नां ॥ नमो तिता नागगपुत्रस्य वा
 ना ॥ नमः आतापे नाना ॥ नमः सके दागमि नां ॥ नमो जागमि नां ॥ नमो लोक सम्यग्मता ना ॥ नमः सम्य
 क्तिपन्नानां ॥ नमो दयलुषि नां ॥ नमो सिद्ध विद्या धा नां ॥ नमो ज वि नां ॥ नमः आ पाय धा नां ॥ ८ ॥

गुरु
२

[illegible]

मः ७
संज्ञा
१५

पर्वपाभनायये मङ्कलमलायाकांकयस्ववद्वारगवन्कः पृजयितुं तेः पृजययस्ववेष्टामथेव
ऊच्यते यवगवांश्च दारुगवतामतिकृत्स्नित्वाधर्मागन्धनिसवेष्टाधर्मास्तदवपुर्मृत्वागयाव
दनृत्वासंन्यक्तं विमरित्तमाधि ॥ १० ॥ तिमहापत्न्यां गिराकूलसम्पदं वपयिगृह्णाति ॥ जननी
सम्पदं वपयिगृह्णाति उपायको भलनकात्मानः वृद्धविग्रहनिर्मायसाकधनुसंक्रामतियगुव
धनारुगवतां मृपादा नास्ति गगुंगत्यादा नपात्रमितावर्त्तलाघन ॥ ११ ॥ यं गी लपात्रमितायाः कृति
पात्रमितायां ॥ विर्यपात्रमितायां ॥ धनपात्रमितायां ॥ पुद्गापात्रमितायां ॥ १२ ॥ अस्मभुन्यतायां ॥ ४
यहि ॥ १३ ॥ अस्मभुन्यतायां ॥ ४ ॥ अस्मवहिर्द्राभुन्यतायां यावदरावसराभुन्यतायां वर्त्तलाघन ॥ १४ ॥ अनामा
वर्त्तलाघन ॥ १५ ॥ अनामानां नृपसमापत्तीनां वर्त्तलाघन ॥ १६ ॥ सत्पस्थानां वर्त्तलाघन ॥ १७ ॥

३३

संम्यक्प्रज्ञाभावाज्जिपादा नानिदृश्यानां वलानां वाक्छान्नां शार्पावागिदृश्यामाश्रयवर्ज्यगणनम् ॥
यत्तुर्लभ्यमाश्रयसंज्ञाभावाज्जिज्ञानादभावात्तथागतवलानां वैश्वानराणां पुनिसंविदानां श्रवणानां वलिकानां
नां वृद्धगणनम् उपायकमलनवधर्मदयति ॥ यान्तुयनवमहावाक्सित्वा विनयनिप्रवक्तव्या
नेनपुण्यकवाक्षियाननवृद्धयानेन ॥ ॐ नमो महापुनित्तिजायानिजाधधर्मज्ञान ॥ ॥

नृपतल्लुपुः दवा नमिं नुरु गवंच नमगदं वा चत ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ गंगा नद्या महा प्रसूति
 त्राया पवित्रा हि नद्या सर्वा पात्र मिताः पवित्रा हीता रुचंति ॥ यत्र न दान पात्र मिता ॥ जीव पात्र मिता ॥ कृति
 पात्र मिता ॥ वीर्य पात्र मिता ॥ अन्न पात्र मिता ॥ पुद्गल पात्र मिता ॥ सर्व विधि पद्माधर्माः सर्व समाधाय ॥ स
 र्वधर्म जली मयानि ॥ सर्व शुभ्यता मपुमा ॥ नान्यत्समाप ह्यः स्यात् हि ज्ञाद भवता निवेधाय

निप्रति संविदा कृदभवे लिबुद्ध धर्माः। यावद हि स्रज समस्तं धर्मात्तव॥ आयतना निप्रति स्रज
स्रजादां गमनि च पप्रि गृहीतान्तरवन्ति॥ अनापतिरुलं पप्रि गृहीतं रवन्ति॥ अवं सकृदा गमनि रुलः
रुना गमनी रुलं मर्हत्वं प्रत्येक वाधिः सर्वकालरूपा पप्रि गृहीतान्तरवन्ति॥ अवं मृकृत्त गवान् मकुंदवा
ना मिदमगदं वा वग॥ अवं भग को नि कम हा वाधि सत्व भगत्॥ महापुत्रं गिजा पप्रि गृहीतया सव
पात्रमिताः पप्रि गृहीतान्तरवन्ति॥ अवं सर्ववाधि प्रकाधर्माः सर्वसमा धय॥ सर्वधर्मा नी मृत्तानी सर्वशुच्य
तामपुमा धर्मा नात्र पप्रि समापत्तय॥ स्रजति रुः सर्वकसलाः कर्म पप्रि धर्मा वलानि वत्ता प्रिवे धर्मा
या निचगत्त॥ प्रति संविदा कृदभवे लिबुद्ध धर्माया वत्तं च स्रज समस्तं धर्मात्तायतना निप्रति स्रज
समस्त्यादां गमनि यावत्त सर्वका जरूपायां पप्रि गृहीतान्तरवन्ति॥ अनपलं को नि कम हा वाधि सत्व पुत्रगा

जायां उग्र हीना अपि ता वचीता पर्यवाफा सिलिचिताया निःमनसि कृतया सकलपुत्रा वाकूलइ हि गावा
 वापु तिलरूप ॥ १८ ॥ अर्धमर्धक नव ॥ १९ ॥ साधु च सुष्ठु च मनसि कृतं विष्णवे ॥ २० ॥ यंत्रगवने निमित्तः
 कौदवा नामि चारु गवतः पुंस्तु ॥ २१ ॥ रगे वाने गंद वाचत ॥ २२ ॥ यः कसि लो नि क महा वा चिसल ज्ञन्य तीर्थ
 कः कूलपुत्रा वाकूलइ हि गावामा जावा मात्र काया का वा देवता मरिमान का वापुंगला वा वा चिसल महासल
 मिमि ॥ महापुं गि जायां विव च यितु कामार विष्पति ॥ विवदितु कामार विष्पति ॥ विगृहीतु कामार वि
 षपति ॥ विजाधयीतु कामार विष्पति ॥ तथा विव च यितु कामानां विगृहीतु कामा ॥ नां जधि जाध यितु का
 मानां उत्पन्ना विगृहा विवादा विजाध पु पुन ज वा न दस्यति ॥ तथा विव च यितु कामानां विगृहीतु का
 मानां विवदितु कामानां विजाध यंतु कामानां सतत मरिपाया ॥ पत्रि पंतिंग मिष्पति ॥ तल्लस्य हता गथा

मः पु
संज्ञि
१०
उं
१

किंको विरुमहा वाचिसत्त्वादीर्घजात ॥ दानपात्रमितायां च जता ॥ भी लपात्रमितायां ॥ कातिपात्रमितायां ॥
विष्यपात्रमितायां ॥ अनपात्रमितायां ॥ पुद्गापात्रमितायां बलतः यथा कृतसः सत्त्वादीर्घजातं वि
गुहा विवादा विजा ॥ नापपयत ॥ नृ ॥ सिका वाका धर्मापविष्टसत्त्वा भिल्यपुति स्थपयित ॥
यथा कृतस ॥ सत्त्वा दीर्घजातं काधया पाद विहिंसा मापयतः ता वाचिसत्त्वामहासत्त्वा नृ ॥ सिका वाका
धर्मापित्री एष्यता सत्त्वा कृतोपुतिष्ठापयंति ॥ यथा कृतमः सत्त्वा दीर्घजातं संसाजंति ॥ य इत नृ ॥
यपुतिपर्यवस्थानत वाचिसत्त्वामहासत्त्वा उपायको नृ ॥ नतपांसत्त्वा नां विनियता सत्त्वा चतुर्षु
पुतिष्ठापयति ॥ चतुर्षु पुमा लष्यत सत्त्वा चतुर्षु समापहिं ष्यपतिष्ठापयंति ॥ चतुर्षु स्म लष्यत सत्त्वा
षु पुतिष्ठापयंति ॥ नृ वंसं न्य क पुता लष्यत सत्त्वा चतुर्षु नि यष्यत सत्त्वा चतुर्षु नृ वंसं न्य क पुता लष्यत सत्त्वा चतुर्षु

गु
१

षु शुभतायां मानि मित्रं नृपुनि हितं समाधिः अजली मयः प्रपुति का पयंति ॥ वरुक्षा र्यसत्पषु नृपि हन
सुदमवलवेऽअजय प्रपुति संवित् स्रक् ष्टाद अस्त्रावे लि कष्वद्व धर्म प्रपुति स्त्रा पयंति ॥ शुभताप
ति रुल सकृदागमिनी रुल नृनागमि रुल जहं ल प्रपुति का पयति ॥ पुत्रक वाक्षे पुति का पयति ॥
नृनृजायां सम्यक् संवाक्षे पुति स्त्रा पयंति ॥ ॐ म न को जिक महा वाधि सत्त्व स्य म हा सत्त्व स्य वाधि
सत्त्व वापि कानां वजता द ष्ठ अर्मिक गु अ नृ संसार विष्यति ॥ संपदा यव नृनृजा यां सम्यक् संवद्व
त्य ॥ धर्म चक्र पूर्व कूय सत्त्वान्य अपु नि अ नृ पुति का प्य नि नृप वि लष नि र्वा ल अतो प वि नि र्वा प वि
ष्यति ॥ ॐ म को जिक महा वाधि सत्त्व स्य प जा यितु काम गु अ नृ सं सार विष्यति ॥ ॥ ॐ ति म
हा पु रं गि जा या नि जा अ नृ य ह्ना न का ति ॥ ॥ पुन न प लं को जिक महा वाधि सत्त्वा य सि नृ प

मः पु
सं जि

११

१०

१

पि वीपुद ए क लपुग वा क ल इ हि ता वा ॥ हुं मां सर्व त भ गता ष्टी ष सि ता त पु शा नां मा प वा डि ता म हा पु ।
ए गि जा म हा वि श्या अ न ली गृ हा ष्य कि अ त्र यि ष्यं ति वा त्र यि ष्यं ति प र्य वा प स्य ति या नि ॥ अ म न सि क
त्रि ष्य ति ॥ न त गु प पि वी पु द ए मा जा वा मा त्र का यि का वा द य ता वा न न्य ती धि का वा प पि वा उ का वा ऋ ति
मा लि का वा पृ ग ला ॥ अं न वि रु वि क पं क र्तुः ॥ अ स्मा म हा पु तिं गि जा या वि गु हा य वि वा दा य नि जा अ य
उ र्ग त ग षां गु ल न् ॥ अं सा र वि ष्य ति ॥ य इ वा स्याः म हा पु एं गि जा यां गु व ल ना न् पु र्व ल ति हि या नै र्पा
प इः र व स्यां तं क वि ष्य ति ॥ त द्य अ पि ना म को भि क म हा वा वि स त्व म द्यु ना मो ष धि त गु णी वि ष ल उ
नु ना वृ त्तु कि त ना हा र्चि ना इ हा त ग व धि ल क षि द व प्रा ल क जा ता द द्वा र व त् ॥ अ त् प्रा ल क जा तं
पू र्ण र्णा दि तु का मः प्रा ल क जा त म न् अ त व त ॥ ॥ अ थ स ल स प्रा ल क जा तः य न सा म गी ना मो

गु ३

११

[illegible]

वाधिसत्त्वानां लोकानां त्रयं समन्वयं ॥ नमः ३ इति तानागतपुष्पत्रयानां त्रयं समन्वयं
त्रयं ॥ नमः ॥ अथापुनानां लोकानां त्रयं समन्वयं ॥ नमः ॥ तत्कृदागमिनां लोकानां समन्वयं
॥ नमः ॥ नागमिनां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां लोकानां समन्वयं ॥ नमः ॥ लोकसमन्वयगणानां वाधि
सत्त्वानां महासत्त्वानां लोकानां त्रयं समन्वयं ॥ नमः ॥ समन्वयकृतिपत्रानां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां त्र
यं समन्वयं ॥ नमः ॥ दक्षिणां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां लोकानां समन्वयं ॥ नमः ॥ ज्येष्ठां वा
धिसत्त्वानां महासत्त्वानां लोकानां त्रयं समन्वयं ॥ नमः ॥ अथानां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां
लोकानां त्रयं समन्वयं ॥ नमः ॥ अथानुगुप्तमर्थानां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां लोकानां त्रयं
समन्वयं ॥ नमः ॥ सर्वविद्याधराणां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां त्रयं समन्वयं ॥ नमः ॥

७२

रावकुरुसमर्थनां वापि सत्त्वानां महासत्त्वानां लोकानां नृपं समनृपं ॥ नमः ॐ न्यायलोकानां स
 मनृपं ॥ नमः रागवत् नृदायलोकानां समनृपं ॥ नमः उमापति सहिताय लोकानां समयन
 पं ॥ नमः वज्रलयलोकानां समनृपं ॥ नमः सर्वनामधिपतये लोकानां समनृपं ॥
 नमः रागवत् नृदायलोकानां समनृपं ॥ नमः रायव महासूदानमस्तु न्यायलोकानां सम
 नृपं ॥ नमः रागवत् नृदायलोकानां समनृपं ॥ त्रिपुलनगत्रयिदाय
 नकत्रायलोकानां समनृपं ॥ नृधिर्मूर्तिर्दकांसी जमहा ॥ नमः नित्यासिनीयलोकानां
 समनृपं ॥ नमः मातृकागल सहिताय ॥ लोकानां समनृपं ॥ ॥ ॐ नमः
 पुष्पगिजायां विनाशकानरावना ॥ ॥ नृधयलूरगवान्पुरुष ॥ याज्ञनिषयउषु

मं: पु
सं: जि
१३

षड्यवलाकिं नाम समाधि १७ लसुसुमदा नाम समाधि १८ सुचंदा नाम समाधि १९ वंदधं नाम समाधि
धि ४ धंजकुरु नाम समाधि ॥ ५ ॥ सर्वधर्मसुमदा नाम समाधि ॥ अथलाकिं नाम समाधि ६ धर्म
भाग नियता नाम समाधि ७ नियमधंजकुरु नाम समाधि ८ वजापमा नाम समाधि ९ सर्वधर्मपुव
गना नाम समाधि १० समाहितवस्था पुतिवा नाम समाधि ११ जाकुमंदा नाम समाधि १२ वलविर्या
नाम समाधि १३ सर्वधर्मसुगता नाम समाधि १४ निरुक्ति नियतपुवगना नाम समाधि १५
रुलवनपुवगना नाम समाधि १६ दिगवलोकना नाम समाधि १७ अजली मृदा नाम समाधि १८
असंपुष्टिता नाम समाधि १९ समवर्त्म नाम समाधि २० आकाशस्थ जल नाम समाधि २१
वज्रमंलुला नाम समाधि २२ धंजागुरु नाम समाधि २३ ॐ न्यकुरु जाजा नाम समाधि २४ ॐ

गु २
१३

गान्गना नामसमाधि २५ सिंह विहंरि नामसमाधि २६ विष्णुसमाधि २७ नामसमाधि २८
जलंजना नामसमाधि २९ वेधावना नामसमाधि ३० जनिमिखा नामसमाधि ३१ विक्रमस्थिता
नामसमाधि ३२ त्रिविना नामसमाधि ३३ विप्लवपुत्रिपत्रा नामसमाधि ३४ जनकपुरा नामसमाधि ३५
पुराकथा नामसमाधि ३६ विषयधर्म मृदा नामसमाधि ३७ समंतावराणा नामसमाधि ३८ गुडावासा
नामसमाधि ३९ विमलपुरा नामसमाधि ४० जलिकथा नामसमाधि ४१ गृध्रा नामसमाधि ४२
मजावति नामसमाधि ४३ जयपग नामसमाधि ४४ नैतिना नामसमाधि ४५ विवृता नाम
समाधि ४६ सूर्यपुरा नामसमाधि ४७ वन्दविमला नामसमाधि ४८ गुडपुत्रिणा नामसमाधि ४९
शुलाकका नामसमाधि ५० राजका नामसमाधि ५१ हानकतु नामसमाधि ५२ विरूस्थिति

मं: पु
सं: १५

नामसमाधि ७२ समंतावलाका नामसमाधि ७३ संप्रतिष्ठिता नामसमाधि ७४ चतुर्कोटि नामसमाधि ७५
यजुष्यमंडा नामसमाधि ७६ सर्वधर्मसमका नामसमाधि ७७ त्रिजहा नामसमाधि ७८ धर्म
गता नामसमाधि ७९ विविक्ता नामसमाधि ८० सर्वधर्मपदपुरा नामसमाधि ८१ समाकृत
वता नामसमाधि ८२ शृङ्गावता नामसमाधि ८३ आवर्तिका नामसमाधि ८४ कनिष्ठा
गता नामसमाधि ८५ पुलाका नामसमाधि ८६ नामनियतपुला नामसमाधि ८७ त्रिकुण्डली
नामसमाधि ८८ विमिश्रिता नामसमाधि ८९ वायुगुह्या नामसमाधि ९० श्रवला नाम
समाधि ९१ विषमभंगि नामसमाधि ९२ सर्वगुलसंख्या नामसमाधि ९३ निष्पीता नामसमाधि ९४
शुक्लपुष्पिता नामसमाधि ९५ वाष्पगता नामसमाधि ९६ शनंकापुला नामसमाधि ९७ ॥

७२
१४

अगमसनामसमाधि ७८ सर्वविभुनामसमाधि ७९ पुतिवदु कनामसमाधि ८० विमति
 कि जलनामसमाधि ८१ नीलविकाना नामसमाधि ८२ उकयुहनामसमाधि ८३ अकाजालि
 निव ८४ नामसमाधि ८५ काजानय काजा नामसमाधि ८६ नील निभय नामसमाधि ८७ स
 कतजुतपुवासा नामसमाधि ८८ नित्रविमृका नामसमाधि ८९ तजावगी नामसमाधि ९० ॥
 जालनाका नामसमाधि ९१ कानूपवि ९२ अष ९३ नामसमाधि ९४ जनाविजकांति नामसमाधि ९५
 सर्वकालावता नामसमाधि ९६ सर्वसूर्य ३ः रवित्रहि नंदिना नामसमाधि ९७ अकयकना
 नामसमाधि ९८ अर्जयति नामसमाधि ९९ सम्प की १०० तसंगुहनामसमाधि १०१ सित्राष्टविजा
 वनामसमाधि १०२ पुतिआना नामसमाधि १०३ साजवगी नामसमाधि १०० वात्रिपूर्ल नामसमाधि १०१

मः पु
न्यंति
१७

विमल चंदां पुला नामसमाधि १०२ विद्यपुला नामसमाधि १०३ महाव्यूह नामसमाधि १०४ सर्व
लोका पुला नामसमाधि १०५ समगा नामसमाधि १०६ अनय विनय नामसमाधि १०७ ऊ
विमूला नामसमाधि १०८ ऊन सत्रल सर्वना नामसमाधि १०९ समवसत्रल नामसमाधि ११०
ऊनिय नियता नामसमाधि १११ तथ स्थिति निजि ता नामसमाधि ११२ कायक वि संप्रमथना
नामसमाधि ११३ वाक वि वि चं सना नामसमाधि ११४ गगल कल्या नामसमाधि ११५ ग्राकास
गंगम विमूला नामसमाधि ११६ विमूकि निरूपा नामसमाधि ११७ समापय तस ॥ १०४ ॥
ॐ तिमहा पु न्यंति त्रा यां समाधि संग्रह मूर्द्धा धर्म स्थाल वना काय वि लष ॥ ॥ नृथ वल
शाय प्पामहा वा धि सत्व मेत दं वा वत ॥ नमारु गाय तथ ग कूलस्य ॥ नमारु गवत्प पन्न
व

१५

कूलस्य ॥ नमारुगवत्पञ्चकूलस्य ॥ नमारुगवत्पमलि कूलस्य ॥ नमारुगवत्पजाडकूलस्य ॥ नमारुगवत्पक
र्मकूलस्य ॥ नमारुगवत्पत्रलकूलस्य ॥ नमारुगवत्पकुमालकूलस्य ॥ नमारुगवत्पनागकूलस्य ॥ नमारु
गवत्पमात्रकूलस्य ॥ नमारुगवत्पमारुकूलस्य ॥ नमारुगवत्पजागकूलस्य ॥ १२ ॥ नमारुगवत्पदृष्ट
गुललसुनपुरुजलजायातभागतायां इह तस्यैव वक्ष्ये ॥ नमारुगवत्पश्रुतालयतभाग
तायां इह तस्यैव वक्ष्ये ॥ नमारुगवत्पश्रुतालयतभागतायां इह तस्यैव वक्ष्ये ॥ नमारु
गवत्पश्रुमितालयतभागतायां इह तस्यैव वक्ष्ये ॥ नमारुगवत्पवज्रजहागलपुमर्दना
यतभागतायां इह तस्यैव वक्ष्ये ॥ नमारुगवत्पवज्रजहागलपुमर्दना
इह तस्यैव वक्ष्ये ॥ नमारुगवत्पवज्रजहागलपुमर्दना
इह तस्यैव वक्ष्ये ॥ नमारुगवत्पवज्रजहागलपुमर्दना

रगवत्पुत्रिक भित्तक मलात्पल गंधकेतु जा जाय ग भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव
 पुत्रे वाचन गर्भ महामेधा य ग भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र नागकुलात्
 व महामेधा य ग भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र मद्यां व ज नामत भ गता यां इ
 हं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र महान्त ज जाय ग भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ४
 नमो रगव पुत्र महामेध सरव नामत भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र सर्ववा
 मनुल विधं ४१ नामा नामत भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र महामेध विद्य कालाना
 मत भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र विदु म ४३ नामा नामत भ गता यां इहं पुस्तम्प
 क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र महामेध नामत भ गता यां इहं पुस्तम्प क्वं व द्वाय ॥ नमो रगव पुत्र

नमो ह गवत्पुमहामय संस्तु वरुहर्ष ७ पुस्तक ४ नानामत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पु
महामय निनादिगर्त नानामत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पुमहामय गति
पगर्त नानामत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पुमहामय सिं नानामत भगतायां इहं पुस्त
कं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पुगग ७ मयुज महामय नानामत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह ग
महामयिकुममय नानामत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पुमहामय निरुक्तिगना
मत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पुमहामय सुद नानामत भगतायां इहं पु
स्तकं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पुमहामय जलय नानामत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह
गवत्पुमहामय विस्तुठ नानामत भगतायां इहं पुस्तकं वदाम्य ॥ नमो ह गवत्पुमहामय गनी

नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय नाराहि जाह काय नाम त भगतायां इहं स
सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय नाराहि जाह काय नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारु
ग वत्स महामय नाराहि जाह काय नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय नाम त भगता
यां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय विरिज नाराहि जाह काय नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमा
रुग वत्स महामय पजाय नाराहि जाह काय नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय धकाय ना
म त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय रुव नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्
दाय ॥ नमारुग वत्स महामय त्रज नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय जजा
य त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥ नमारुग वत्स महामय पुर नाम त भगतायां इहं सस्य क्वं व्दाय ॥
म्य

[illegible]

१ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्रा लाम्बक मरुमद्य जा जा नाम त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ४
नमो रगवत्पुत्र मरुमद्य समुद्र पुत्र ॥ नाम त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र नमो रगवत्पुत्र
मरुमद्य संकाय नाम त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र नमो रगवत्पुत्र मरुमद्य नाम
त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र सर्व मद्य विरायना दि जाम्बव जा ह कृती त जाम्बक
च मरुमद्य त्रिभि नाम त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र सूर्य पुदी पा नाम त भगतायां
१ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र चन्द्र पुदी पा नाम त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रग
वत्पुत्र जल पुदी पा नाम त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र जल पुदी पा नाम त भगतायां १ हं
स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र किंति ग र्हाय त भगतायां १ हं स्पसंम्य कूं वृद्धाय ॥ नमो रगवत्पुत्र जल

[illegible]

माष्ट्रुष सितागपुता नामा यजति तामहापु संज्ञि जापु व कामि ॥ सर्वकली कलह विगुरु वि वादपु भन
मलि ॥ सर्वइ कागुरुपु मा वनीः सर्वरुत निवा जली ॥ सर्वप वि विद्या क दनी ॥ सवाकाल मरुप विजय
नी ॥ सर्वसत्वा चंद्रमा कली ॥ सर्वइः स पुंस्तं ना भनी ॥ सर्वनिग्ध रंज नी ॥ सर्वय क जा क सगु रानां वि
धं सनकनी ॥ चतुर्जसिती नांगुरु सरु त्नां लं विधं सनकली ॥ ~~सर्वसत्वा चंद्रमा कली~~ श्रुवा विंशतिनक
गाला पुसा दन कनी ॥ सर्वसर्तु निवा जली ॥ श्रुवा नांगु रानां विधं सनकनी ॥ धात्रइ वृइः स पुनाम
नी ॥ सर्वविष भलाग न्य दका स्ता जनी ॥ सर्वइ इति र था कानली ॥ यावदका वकाल मल लप विता
यनी ॥ श्रुप जाति तामहावा जा महा वलाग भपि च ॥ महागजा महाचंठां ज याच विज याग था ॥ सर्व
माल विहृनु व वज्र माला ति विष्णु गा ॥ पु सारु वज्र विंका वमा ला चे वाप जाति ता ॥ वज्र तु लु वि

॥ ला व ॥ का वेद हृत्पु जि ता ॥ सो म्यत्र पीम हा ॥ ता का ला पा लु न वा सि नी ॥ आर्य ता ज म हा व न मृ प जा जि
ता व उ लं द ला ॥ व र्ज को मा ली का वे व न शे वा नृ त कू ली ॥ व उ ह स्ता म हा वि या न भ का व न मा लि का ॥ वं सु
ह न त्र का वे व वे ला च न कू ल पु रा ॥ त भ ग न कू ला षी ष वि शु धि ता वि शं रा मा लि का ॥ व उ क न क पु रा ला व
ना व उ तुं ली च स्त ता च क क म ला की च त भ गी व द्वा ला च ना ॥ य भ व उ ध जा च द्या त भ व उ ध जा पि च ॥ व
ज मा ला म हा मृ डा द वी च क न क पु रा ॥ ह ला च ना व लु ता च त शे व क म ला कि नी ॥ वि नी ता भ न वि का
ला गु ल ज्ञान भ सि पु रा ॥ ॐ ह्र ता म हा प्र सृ जि ता म हा मृ डा स ग ॥ सर्व मातृ ग ॥ ले व न का क वं तुं
ई रु ठ स्ता हा ॥ ॥ ॐ प्र सृ जि त स्ता हा ॥ ॐ प्र सृ जि ता य स्ता हा ॥ ॐ मृ प जा जि ता य स्ता हा ॥ ॐ म हा धा
जा ये स्ता हा ॥ ॐ म हा व ला ये स्ता हा ॥ ॐ म हा ग जा ये स्ता हा ॥ ॐ म हा वं लु ये स्ता हा ॥ ॐ म हा स ता ये स्ता हा ॥

ॐ म हा दि पा र्थे सा हा ॥ ॐ म हा वा ला र्थे सा हा ॥ ॐ म हा मा ला र्थे सा हा ॥ ॐ म हा पा लु त वा सि न्ये सा
हा ॥ ॐ म हा य र्थे सा हा ॥ ॐ म हा क र्थे सा हा ॥ ॐ म हा ज र्थे सा हा ॥ ॐ म हा वि ज र्थे सा हा ॥ ॐ
स र्व मा ला र्थे सा हा ॥ ॐ व उ मा त्रि र्थे सा हा ॥ ॐ पु मा रा र्थे सा हा ॥ ॐ व उ वि ङ्ग र्थे सा हा ॥ ॐ मा ला र्थे सा
हा ॥ ॐ व उ तुं लि का र्थे सा हा ॥ ॐ वि ञ्ग ला कि र्थे सा हा ॥ ॐ म ना र्थे सा हा ॥ ॐ द ह प उ ता र्थे सा हा ॥ ॐ सो
म य र्थे सा हा ॥ ॐ म हा ल ता र्थे सा हा ॥ ॐ वा ला र्थे सा हा ॥ ॐ पा लु त वा सि न्ये सा हा ॥ ॐ म प वा उ ता
र्थे सा हा ॥ ॐ व उ म र्थे सा हा ॥ ॐ व उ क र्थे सा हा ॥ ॐ व उ क र्थे सा हा ॥ ॐ व उ क र्थे सा हा ॥ ॐ व उ क र्थे सा हा ॥ ॐ
सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ
वि ङ्ग र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ
ला कि र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ क र्थे सा हा ॥ ॐ

ॐ दधि कनकपुलाये साहा ॥ ॐ कमलाकिं ^{वे} साहा ॥ ॐ अक्षयिं साहा ॥ ॐ ज्ञानपुलाये साहा ॥ ॐ भ
मिपुलाये साहा ॥ ॐ लोचनये साहा ॥ ॐ स्रवाचनये साहा ॥ ॐ तापसाहा ॥ ॐ तालाहवसाहा ॥ ॐ सर्व
सत्त्वार्कपिनाये साहा ॥ ॐ सर्वसत्त्वान्नालीये साहा ॥ ॐ सहस्रपुत्रये साहा ॥ ॐ सहस्रपुत्रये साहा ॥
ॐ श्रवसाकये साहा ॥ ॐ तापसाहा ॥ ॐ तुलायसाहा ॥ ॐ सिद्धसाहा ॥ ॐ समिद्धये साहा ॥ ॐ शुद्धसाहा ॥
ॐ विभुद्धये साहा ॥ ॐ स्रगतात्मजसाहा ॥ ॐ मेरुहृदये साहा ॥ ॐ मसाहा ॥ ॐ ममयसाहा ॥ ॐ पुत्र
पसाहा ॥ ॐ पुत्रपुत्रपिनासाहा ॥ ॐ श्रवसाकिताये साहा ॥ ॐ महाजोडये साहा ॥ ॐ विभज्यपीये सा
हा ॥ ॐ महावज्राये साहा ॥ ॐ महानजाये साहा ॥ ॐ लोकभक्तिये साहा ॥ ॐ सत्यभक्तिये साहा ॥ ॐ विभु
लाकिये साहा ॥ ॐ प्रज्ञाये साहा ॥ ॐ वृद्धिबद्धनये साहा ॥ ॐ धर्मिदाये साहा ॥ ॐ पृथ्विदाये साहा ॥ ॐ

ॐ कालाये साहा ॥ ॐ कामरूपिणीये साहा ॥ ॐ सत्वहिताये साहा ॥ ॐ संग्रामात्मजानीये साहा ॥ ॐ प्रह्ला
 पात्रमिताये साहा ॥ ॐ आर्यतात्राये साहा ॥ ॐ इन्द्रिये साहा ॥ ॐ भंदिनीये साहा ॥ ॐ विद्यात्राहे साहा ॥
 ॐ प्रियंवदाये साहा ॥ ॐ चंद्राननाये साहा ॥ ॐ महामेघाये साहा ॥ ॐ कृतिताय साहा ॥ ॐ पीतवाससा
 ये साहा ॥ ॐ महामाय साहा ॥ ॐ इक्षुसत्वाये साहा ॥ ॐ सनंदिनीये साहा ॥ ॐ निरुदनीये साहा ॥ ॐ पुष्पा
 नाये साहा ॥ ॐ भंक्रुपाये साहा ॥ ॐ विजयाये साहा ॥ ॐ कलत्रपुण्यसाहा ॥ ॐ विष्णुमाननीये
 साहा ॥ ॐ भंजीर्युदीये साहा ॥ ॐ चक्रिवापीये साहा ॥ ॐ जगद्व्याये साहा ॥ ॐ उत्तरीये साहा ॥
 ॐ सैकनीये साहा ॥ ॐ कालत्राहि ये साहा ॥ ॐ निभत्राये साहा ॥ ॐ जगनीये साहा ॥ ॐ माहमा
 ये साहा ॥ ॐ भंकाये साहा ॥ ॐ जगये साहा ॥ ॐ जगदि ये साहा ॥ ॐ विनिपुणये साहा ॥ ॐ ग्रासनीये

सा हा ॥ अथ उ मा ग ये सा हा ॥ अं गु ष वा सि न ये सा हा ॥ अं मा ग ल्या ये सा हा ॥ अं मं क जी ये सा हा ॥ अं सो
मा ये सा हा ॥ अं आ न व द ये सा हा ॥ म न ऊ वा य सा हा ॥ अं का पा लि नी ये सा हा ॥ अं म ह वं ग ये सा हा ॥
अं सु ष्म प त्र डि ग ये सा हा ॥ अं सु ष्म प त्र डि ग ये सा हा ॥ अं सार्ध वा ह ये सा हा ॥ अं कृ पा वि षु ये सा हा ॥ अं न रु
मार्ग पु द र्भ नी ये सा हा ॥ अं व ज द ये सा हा ॥ अं भ स नी ये सा हा ॥ अं भ क्री ये सा हा ॥ अं ति न्द्र पा ये सा हा ॥ अं म
न वि कु मा ये सा हा ॥ अं भ व त्रा ये सा हा ॥ अं थ श्रि ये सा हा ॥ अं चं ड ली ये सा हा ॥ अं मृ त बां ध वा ये सा हा ॥
अं ध न्या ये सा हा ॥ अं प ल्म ये सा हा ॥ अं म हा रा ग ये सा हा ॥ अं मृ त ग ये सा हा ॥ अं पि य द र्भ ना ये सा हा ॥
अं कृ ता न्ता ये सा हा ॥ अं भ नि री मा ये सा हा ॥ अं उ ग्र ये सा हा ॥ अं उ ग्र म हा त्र पा ये सा हा ॥ अं उ ग द का ये सा
हा ॥ अं न रु उ षा ये सा हा ॥ अं भ त्र ल्म ये सा हा ॥ अं रु कि व ल ला ये सा हा ॥ अं वा गी भ त्री ये सा हा ॥ अं भि वा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ सर्वगुमान्वायेसाहा ॥ ॐ सर्वार्थभाधनीयेसाहा ॥ ॐ गमयि येसाहा ॥ ॐ धि येसाहा ॥
 ॐ धनंदायेसाहा ॥ ॐ शोभामियेसाहा ॥ ॐ शोभा कृष्णनामजायसाहा ॥ ॐ गुणनकायेसाहा ॥ ॐ सर्वभाष
 त्रिपुत्रलीयेसाहा ॥ ॐ गात्रकृपापलं वनीयेसाहा ॥ ॐ मे आत्मकप्रवर्धयेसाहा ॥ ॐ अष्टि लपुसस्येसाहा ॥ १६८ ॥
 ॐ अष्टि लपुसस्ये सर्वतभगताष्टि सितानपजा नामा पत्रातिता महापुत्रं शिवा महाविद्या वाही तयभा ॥ ७२
 कभंरगवन नृपस्यामहि निहात्राय महापुत्रं शिवा रिनिर्हर्तव्या ॥ वेद नानरि निहात्राय महापुत्रं शिवा
 रिनीर्हर्तव्या ॥ सद्भा नरि निहात्राय महापुत्रं शिवा रिनिर्हर्तव्या ॥ सखा ला रिनी हात्राय महापुत्रं शिवा
 रिनीर्हर्तव्या ॥ विज्ञानमरि निहात्राय महापुत्रं शिवा रिनिर्हर्तव्या ॥ वदूषा नरि निहात्राय महापुत्रं
 शिवा रिनिर्हर्तव्या ॥ अज्ञानमरि निहात्राय महापुत्रं शिवा रिनिर्हर्तव्या ॥ दानमरि निहात्राय ॥

महापुरुषमिन्द्राय नमः ॥ उक्ताया नमः ॥ उक्ताया नमः ॥ उक्ताया नमः ॥ उक्ताया नमः ॥
यमहापुरुषमिन्द्राय नमः ॥ मनस्य नमः ॥ मनस्य नमः ॥ मनस्य नमः ॥ मनस्य नमः ॥
मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥
गङ्गाय नमः ॥ गङ्गाय नमः ॥ गङ्गाय नमः ॥ गङ्गाय नमः ॥ गङ्गाय नमः ॥
मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥ मिन्द्राय नमः ॥
महापुरुषमिन्द्राय नमः ॥ चक्रविज्ञानस्य नमः ॥ चक्रविज्ञानस्य नमः ॥ चक्रविज्ञानस्य नमः ॥
उविज्ञानस्य नमः ॥ उविज्ञानस्य नमः ॥ उविज्ञानस्य नमः ॥ उविज्ञानस्य नमः ॥ उविज्ञानस्य नमः ॥
पुण्ड्रमिन्द्राय नमः ॥ उक्ताया नमः ॥ उक्ताया नमः ॥ उक्ताया नमः ॥ उक्ताया नमः ॥

नरिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ वरुः संस्र भस्या नरिनि हाजायम हापुसंति जारि नि
हर्क्या ॥ अरु संस्र यस्या नरिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ द्वाभ संस्र भस्या नरिनि हाजाय
हर्क्या ॥ जि का संस्र भस्या नरिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ काय संस्र भस्या नरि नि
हाजाय हर्क्या ॥ मना विकानस्या नरिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ वरु संस्र भयाय
दना नरिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ अरु संस्र भजावदना नरिनि म हापुसंति ज
रिनि हर्क्या ॥ द्वाभ संस्र भजावदना रिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ जि का संस्र भया
वदना रिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ काय संस्र भयावदना नरिनि हाजायम हापुसं
ति नि हर्क्या ॥ मनः संस्र भयावदना नरिनि हाजायम हापुसंति जारि नि हर्क्या ॥ पृथिवी ध

तु न न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ १ ॥ अ तु म न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु
रु व्या ॥ २ ॥ आ अ तु न न रि नि हा जा य म हा म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ वा य अ तु न न रि नि हा जा य म
हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ ३ ॥ आ वा म अ तु न न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ स र्हा
जा ना म न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ वि ह्ना न अ तु न न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा
रि नि र्हु र्हु व्या ॥ ४ ॥ वि श्या न रि नि र्हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ ॥ वि ह्ना न स्या न रि नि र्हा
जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ ना म न्र प स्या न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ ५ ॥ ष ठा
प त न स्या न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि र्हु र्हु व्या ॥ स्र स स्या न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा रि नि
र्हु र्हु व्या ॥ ६ ॥ व द ना न रि नि हा जा य म हा प्र सृ णि जा य रि नि र्हु र्हु व्या ॥ ७ ॥ रु ष्म न रि नि र्हा जा य म हा प्र सृ

मः पु
ये जि
२५

जिजाहिनिहूर्क्या॥ उपायदामानरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ उजामजलरिनिहा
त्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ दानपात्रमितानरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥
भीलपात्रमितायनरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ कार्तिपात्रमितानरिनिहात्राय
महापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ वीर्यपात्रमितानरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥
नपात्रमितानरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ पुद्गलपात्रमितानरिनिहात्रायमहापु
संजिजाहिनिहूर्क्या॥ ॐ अहं शुन्यतायां नरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ वहिर्द्धा
शुन्यतानरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ ॐ अहं वहिर्द्धा शुन्यतानरिनिहात्रायम
हापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ शुन्यता शुन्यतानरिनिहात्रायमहापुसंजिजाहिनिहूर्क्या॥ महापु

७२
२५

न्यतानि निहायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ प्रथमार्थं न्यतानि निर्गुणाय महाप्रसंगि जा
ति निर्हर्तुव्या ॥ संसृज न्यतानि निहायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ असंसृज न्यतानि नि
हायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ असंसृज न्यतानि निहायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ अ
नवजागु न्यतानि निर्हायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ प्रकृति न्यतानि निहायाय महाप्र
संगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ सर्वधर्म न्यतानि निहायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ स्वलक्षण न्य
तानि निहायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ अनूपलक्षण न्यतानि निहायाय महाप्रसंगि जा
ति निर्हर्तुव्या ॥ अलाव न्यतानि निहायाय निमहाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ स्वलाव न्यतान
निहायाय महाप्रसंगि जाति निर्हर्तुव्या ॥ अलाव स्वलाव न्यतानि निहायाय महाप्रसंगि जाति
निर्हर्तुव्या ॥

निर्हर्क्या ॥ सप्तपथानामनरिनि हाजाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ सम्यक्पुत्रात्मनरिनिर्हर्
जाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ अश्विपादानरिनिर्हर्जाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ सुन्दिया
नरिनि हाजाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ बलान्नरिनि हाजाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥
वायं गमनरिनिर्हर्जाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ अर्थाष्टांगमागमनरिनि हाजाय महा
पुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ अर्थाष्टागमनरिनि हाजाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ अना
मनरिनि हाजाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ अप्रमात्मनरिनि हाजाय महापुण्यं गिरिनि
निर्हर्क्या ॥ आर्यस्य सप्तपथानामनरिनिर्हर्जाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ विभा दानरि
निर्हर्जाय महापुण्यं गिरिनिर्हर्क्या ॥ अनर्पव विहात्र सप्तपथानामनरिनि हाजाय महापुण्यं

गिरातिनिर्हर्ह्या॥ मुन्यता निमि क्ता पु निरुति विमा क्ता र्ता नि न्नरि निरु हायम हापु र्ग गिरा हर्ह्या॥
नरि हानरि नि हायम हापु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥ समा धनरि नि हायम हापु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥
धननी मर्या न्ना रिनी हायम हापु र्ग गिरा नरि निर्हर्ह्या॥ दधन धगग वलान्ना रिनि हायम हा
पु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥ चत्ता त्रिवे न्नयानि न्नरि नि हायम हापु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥ चगः स
पुति सं विदानरि नि हायम हापु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥ महाकृ न्नरि नि हायम हापु र्ग गिरा
ति निर्हर्ह्या॥ नृष्टाद न्नव निका वृद्ध धर्मा नरि नि हायम हापु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥ अगा पार्ति न्न
लानरि नि हायम हापु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥ सकृता गमि न्नलानरि नि हायम हापु र्ग गिराति
निर्हर्ह्या॥ नृना गमि न्नलानरि नि हायम हापु र्ग गिराति निर्हर्ह्या॥ पु र्ग क वाधि नरि निर्हर्ह्या॥

स्तानां विंशं सनक जी ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं हूं जगन्निधि न कृता नापु सादनक जी ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं हूं जगन्निधि न
 हाउ हानां विंशं सनक जी ॥ ॐ हूं हूं हूं हूं हूं सर्व सत्यानां च न कृता नापु सादनक जी ॥ ॐ सर्वत आगता प्रीति
 गत का प्रमहाय जादक निरुवन मं लुल सक्ति रवे तु मम सर्व सत्यानां च हूं हूं हूं हूं हूं सा हा ॥ ॥
 जाऊर याग १ बीज रयाग २ अग्निरयाग ३ उदकर याग ४ विष अर्तु रयाग ५ अर्तु रयाग ६ अर्तु रया
 ग ७ पत्र चक्र रयाग ८ इति कर याग ९ अग्निरयाग १० अग्निरयाग ११ अका प्रमह रयाग १२
 अज जी कर याग १३ कं पु रयाग १४ उल्का पात्र रयाग १५ जाऊ दंड रयाग १६ बंड मगर याग १७
 चंदर याग १८ नागर याग १९ मकर याग २० विद्युत रयाग २१ जाऊ सर याग २२ नफ वाऊ कार
 याग २३ सुपली रयाग २४ सर्व भूषण दवा पत्र ग्राया या सर याग २५ गुह रयाग २६ दवर याग २७ ॥

मः ७
सं ३
२८

नागरुयात २८ यकुरुयात २९ जाकुरुयात ३० गंधर्वरुयात ३१ गरुडरुयात ३२
मरुतरुयात ३३ किंनलरुयात ३४ महाजगरुयात ३५ मरुषागुहात ३६ श्रमषागुहा ३७ रतगुहात ३८
पुनगुहात ३९ पिशाचगुहात ४० कसापुगुहात ४१ पृथ्वीगुहात ४२ कठपुत्रगुहात ४३ रुद्रगुहा
त ४४ उन्नमादुगुहात ४५ कायागुहात ४६ जपसाजगुहात ४७ अंसाजकगुहात ४८ जामिकागुहा
त ४९ मकुनिकागुहात ५० मातुनदिकागुहात ५१ लमिकागुहात ५२ समिकागुहात ५३ गालव
नगुहात ५४ ठाकिनीगुहात ५५ कठठाकिनीगुहात ५६ कठकठठाकिनीगुहात ५७ सर्वगुहात ॥ ५८ ॥
अंजावाहासिन्धु ॥ गरुहासिन्धु ॥ त्रिजिहासिन्धु ॥ वसाहासिन्धु ॥ मांसाहासिन्धु ॥ मदाहासिन्धु ॥
मज्जाहासिन्धु ॥ आताहासिन्धु ॥ उविताहासिन्धु ॥ वत्साहासिन्धु ॥ मात्साहासिन्धु ॥ गंधाहासिन्धु ॥

७३
२८

धृषाहाविष्णु ॥ पृष्ठाहाविष्णु ॥ दलाहाविष्णु ॥ मस्याहाविष्णु ॥ आरुह्यहाविष्णु ॥ पूजाहाविष्णु ॥
विष्ठाहाविष्णु ॥ मृगाहाविष्णु ॥ द्युताहाविष्णु ॥ शुष्माहाविष्णु ॥ सिंहानकाहाविष्णु ॥ वानाहा
विष्णु ॥ विजिक्ताहाविष्णु ॥ अस्रयाहाविष्णु ॥ उक्किहाहाविष्णु ॥ स्यंदनिकाहाविष्णु ॥ विनाहा
विष्णु ॥ २८ ॥ सर्वतथागता बुद्धिंसीतातपशानामापज्जिता महापुण्यगिजा महाविद्याध्वज
यत ॥ ममसर्वसत्त्वानां वनकाकजगिगुं पिंपजिगुं लंपजिगुं हंपजिपालनं भंकि सस्ययनंद
लुपेजि हात्रं अस्रपजि हात्रं विषद्वयनं विखनाशनं सीमाबंधनं धजनी वंधकू वंनुं जा वंतुं वष
भतुं पञ्चतु भज दां भुं ॥ नमः ॥ नमः सर्ववृद्धानां ॥ नमः पुण्यकवृद्धानां ॥ नमः मरियपुमृषा
नां ॥ नमः समतवृद्धानां ॥ नमः नागभिमिनां ॥ नमः सकृदागमिनां ॥ नमः अगुपुत्रानां ॥ नमः संम

मः पु
२६

अज्ञानं ॥ नमः संस्य कृति पन्नानां ॥ नमोद वृत्तं कल ॥ नमः ॐ न्याय ॥ नमोद गवत्पुत्राय ॥ उमापति सहि
ताय ॥ नमोद वृत्तं ॥ नमः सर्वनाम विपुत्राय ॥ नमोद कृष्णाय ॥ नमः ॐ न्याय ॥ नमः ॐ न्याय ॥ नमः ॐ न्याय ॥
नमः विपुत्राय ॥ नमः विपुत्राय ॥ नमः वेत्तवर्त्तय ॥ नमोद वाना ॥ नमो नाना ॥ नमो नाना ॥
नमो मन्त्राणां ॥ नमो गन्त्राणां ॥ नमो गन्त्राणां ॥ नमः किं न्याय ॥ नमो महान्त्राणां ॥ नमो यक्षाणां ॥ नमो
जाकृत्ताणां ॥ नमो ह्युताणां ॥ नमः पिशाचाणां ॥ नमो दुष्काणां ॥ नमो पुत्राणां ॥ नमः कठ
पृष्ठनां ॥ नमः सुदनां ॥ नमोद न्यायानां ॥ नमः कायानां ॥ नमो नृपस्यानां ॥ नमो उं न्यायानां ॥ नमो
न्यायानां ॥ नमः चन्द्रार्थानां ॥ नमः सूर्यार्थानां ॥ नमो नृपानां ॥ नमो क्षात्रिणां ॥ नमो गृहानां ॥ नमो
मृषिणां ॥ नमः सिद्धयुताणां ॥ नमः सिद्ध विद्याधराणां ॥ नमो न्याय ॥ नमो न्याय ॥ नमो न्याय ॥

३३
२६

थ ॥ नमो भूमिनाथ ॥ नमो जंरुनीय ॥ नमो रुद्रनाथ ॥ नमो मानसिय ॥ नमो वापठाय ॥ नमो डाविनीय ॥
नमोः भवप्रिय ॥ नमो भूधभवजीय ॥ नमो वज्रलीय ॥ नमो मार्गजीय ॥ नमो नागहृदयाय ॥ नमो ग
ज्जुहृदयाय ॥ नमो खगुदजीय ॥ नमो मालिरुद्राय ॥ नमो पुरुषरुद्राय ॥ नमः समरुद्राय ॥ नमो
महासमरुद्राय ॥ नमः सर्वगुह्यमां ॥ यः ॐ मां सर्वतथागतपुष्पसिंहातपुत्रा नामा पत्राङ्गिताम
हपुष्पगितामहाविद्या ज्ञाह्नीध्वजयत ॥ ॐ मां सर्वतथागतपुष्पसिंहातपुत्रा नामा पत्राङ्गिताम
हपुष्पगितामहाविद्या ज्ञाह्नीध्वजयत ॥ मम सर्वसत्त्वा नां च वक्राकनामिगुफिं पत्रिगानं पत्रिगुहं
पत्रिपालनं भक्तिस्वस्वायनंदं लुपत्रिहालं भक्तपत्रिहात्रं विषड्विषविरवनाभनंसिंमावधनं ध्वजनी
वंधं कूर्वन्कुजीवंतु यदर्थमां पञ्चनुभलदागतं ॥ ॐ नमो महापुष्पगिताया साधनं यद्वाचनं ॥

अथ सर्वेषां सर्वगुणानां सर्वविद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ भद्रकृतां विद्या किंदुयाम्यसिना की
लया वजन ॥ अथ दक्षिणा कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ पवित्रा कृतां विद्या किंदुयाम्य
सिना कीलया मिव जन ॥ नारायण कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ महापुरुष कृतां विद्या
किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ महाकाल कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ मातृका ग
ल कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ कापालिक कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ भ
वत्र कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ पृथ्वी कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ ४
रथवर्ण कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ वज्रोन्मात्रिक कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कील
या मिव जन ॥ यमालि कृतां विद्या किंदुयाम्यसिना कीलया मिव जन ॥ यमइति कृतां विद्या किंदुयाम्यसि

ना कीलया मि वञ्जन ॥ कूल नाग कृता विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ नृगि कर्म कृतां विद्या किं
डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ विनायक कृता विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ कुमाल कृ
ता विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ वर्तुमाहा जात विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥
वर्तुगनी कृता विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ गज उ कृता विद्या किं डयाम्यसिना कील
या मि वञ्जन ॥ जयक नम च कल सिद्धि क ज सर्वार्थ साधन कृता विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि व
ञ्जन ॥ रु गिजा ठि कृतां विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ पंडिक नल कार्त्तिक य कृता विद्या
किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ वन्द कृता विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ गलप मि
सहाय कृतां विद्या किं डयाम्यसिना कीलया मि वञ्जन ॥ नग शुभ ल कृता विद्या किं डयाम्यसिना

मः ३
सुगि
३१

कालयामिवजन॥ कर्तृकृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ भवलाकिस्त्रमलकृताविद्या
किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ वेर्गजागकृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ यज
पा निरुद्धाविपति कृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ यततुष्टकृताविद्या किंदुयाम्य
सिना कालयामिवजन॥ यनकापि कृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ मृत्पुष्टवक्ष-
कृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ इगदती कृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥
यच्छयदि कृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ सर्वर्षिगल कृताविद्या किंदुयाम्यसि
ना कालयामिवजन॥ सर्वदयगल कृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ सर्वनागगल कृ
ताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥ सर्वयक्षगल कृताविद्या किंदुयाम्यसिना कालयामिवजन॥

गुरु
३१

सर्वगं सर्वगल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ सर्वगं नूतन गल कृता विद्या छिड याम्य सिना की
लयामिव उन ॥ सर्वकिं नूतन गल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ सर्वमहाजगल कृ
ता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ सर्वरुत गल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव
उन ॥ सर्वपुत गल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ सर्वपिण्ड गल कृता विद्या छि
ड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ सर्वउन्नाड गल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ ४
सर्वकाय गल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ सर्वपुष्पाल गल कृता विद्या छिड या
म्य सिना कील यामिव उन ॥ सर्वउंस्तलक गल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ स
र्वहितैषि ल कृता विद्या छिड याम्य सिना कील यामिव उन ॥ ॥ अरुगवमिजक २ मम सर्वसत्ता

ना व सर्वरथा पुडव स। सा हा॥ सर्वरथा पुडव स। सर्वपुसुर्थिक पुसुमिगुहिने सि। वा सर्वरथा पुडव
 स॥ ॐ सर्वतथा गता ब्रह्म सितात पण नमास्तु स॥ सर्ववद वाधि सत्वनमास्तु॥ नृसिना नलोक
 सि क पुस्तु ह सितात पण॥ नृसु॥ क पंर गवन सर्वतथा गता ब्रह्म सितात पण ना मा पजा जिनाम
 हा पु सुगिना महाविद्या जाहा॥ रंग वा नाह॥ कृषिय महाभल कूलानि ग रिलत या सुसुधि त महा
 वाधि सत्वा गंरी नाम हा पु सुगिना नाम स्वयं लोक प्राइरा वा रवति॥ ग सुन महाभल कूलानि ग
 रिलत या सुसुत वाधि सत्वा गंरी नाम हा पु सुगिना नाम स्वयं लोक प्राइरा वा रवति॥ वरु महा
 जाज महाभल कूलानि गंरी जत या सुसुत वाधि सत्वा गंरी नाम हा पु सुगिना यां लोक प्राइरा वा
 रवति॥ गायति नानंद वा नां ग रिल जत या सुसुत महा वाधि सत्वा गंरी नाम हा पु सुगिना यां लोक

प्राइराकारवन्ति ॥ यामादेवानां गरी जतया सूरतमहा वाधिसत्त्वानां गरी लामहापुसंगिना या नामध
मलाक प्राइराकारवन्ति ॥ तुषितादेवानां गरी जतया सूरतमहा वाधिसत्त्वानां गरी जामहापुसंगिना
नामधये लाक प्राइराकारवन्ति ॥ त्रिबानजतिनादेवानां गरी जतया सूरतमहा वाधिसत्त्वानां गरी जत
यामहापुसंगिना नामधये लाक प्राइराकारवन्ति ॥ पञ्चमीतव सबहिं न गरी जतया सूरतम
हा वाधिसत्त्वानां गरी जामहापुसंगिना नामधये लाक प्राइराकारवन्ति ॥ उक्कमायिका नादेवानां ग
री जतया सूरतमहा वाधिसत्त्वानां गरी जामहापुसंगिना नामधये लाक प्राइराकारवन्ति ॥ उक्क
प्रादितानादेवानां गरी जतया सूरतमहा वाधिसत्त्वानां गरी जामहापुसंगिना नामधये लाक प्राइराकारवन्ति ॥
उक्कप्राषादेवानां गरी जतया सूरतमहा वाधिसत्त्वानां गरी जामहापुसंगिना नामधये लाक प्राइरा

मः पु
सुगि
३३

धारयन्ति ॥ महावृक्ष आदवानां गंगी जतया सरतम महा वाधिसत्त्वा गंगी जामहापु सुगि ज नाम स्त्रेयं ला
क प्राइरा धारयन्ति ॥ आराधवानां गंगी जतया सरतम महा वाधिसत्त्वा गंगी जामहापु सुगि ज नाम स्त्रे
यं लाक प्राइरा धारयन्ति ॥ पविता राधवानां गंगी जतया सरतम महा वाधिसत्त्वा गंगी जामहापु सु
गि ज नाम स्त्रेयं लाक प्राइरा धारयन्ति ॥ अपमाना राधवानां गंगी जतया सरतम महा वाधिसत्त्वा
गंगी जामहापु सुगि ज नाम स्त्रेयं लाक प्राइरा धारयन्ति ॥ आराधवानां गंगी जतया सरतम महा वा
धिसत्त्वा गंगी जामहापु सुगि ज नाम स्त्रेयं लाक प्राइरा धारयन्ति ॥ गुरु कृत्वा दवानां गंगी जतया
सरतम महा वाधिसत्त्वा गंगी जामहापु सुगि ज नाम स्त्रेयं प्राइरा धारयन्ति ॥ बृहत्कला दवानां गं
गी जतया सरतम महा वाधिसत्त्वा गंगी जामहापु सुगि ज नाम स्त्रेयं लाक प्राइरा धारयन्ति ॥ कृतपादवानां गंगी ज

गु
३३

गवासरुतगवाधिसत्त्वामहासत्त्वगरीजामाम्लेयंलाङ्कप्राइरावारुवन्ति॥सुदर्भनादवानांगरीजतया
 सरुतगमहावाधिसत्त्वगरीजामहाप्रभृतिजामाम्लेयंलाङ्कप्राइरावारुवन्ति॥कृकनिवादेवानां
 गरीजतयासरुतगमहावाधिसत्त्वगरीजामहाप्रभृतिजामाम्लेयंलाङ्कप्राइरावारुवन्ति॥आकाशमनक्याय
 तनामामदेवानांगरीजतयासरुतगमहावाधिसत्त्वगरीजामहाप्रभृतिजामाम्लेयंलाङ्कप्राइरावारुवन्ति॥
 विह्वानानंलायतनादवानांगरीजतयासरुतगमहावाधिसत्त्वगरीजामहाप्रभृतिजामाम्लेयं
 लाङ्कप्राइरावारुवन्ति॥आदिचन्यायतनादवानांगरीजतयासरुतगमहावाधिसत्त्वगरीजामहाप्र
 भृतिजामाम्लेयंलाङ्कप्राइरावारुवन्ति॥नामसंज्ञादवानांगरीजतयासरुतगमहावाधिसत्त्वगरी
 जामहाप्रभृतिजामाम्लेयंलाङ्कप्राइरावारुवन्ति॥नेवसंज्ञादवानांगरीजतयासरुतगवाधिसत्त्वा

गरीजामहाप्रसंगिजानामश्लेषलाकप्राइरावारवति ॥ दानपात्रमितायांगरीजतयासुरतमहावा
 चित्तत्वा नांगरीजामहाप्रसंगिजानामश्लेषलाकप्राइरावारवति ॥ भालपात्रमीतायांगरीजतयासु
 रतमहावाचित्तत्वा नांगरीजायां महाप्रसंगिजायां नामश्लेषलाकप्राइरावारवति ॥ कामिपात्र ३४
 मीतायांगरीजतयासुरतमहावाचित्तत्वा मरीजायां महाप्रसंगिजानामश्लेषलाकप्राइरावारवती ॥ ३४
 वीर्यपात्रमितायांगरीजतयासुरतमहावाचित्तत्वा गरीजामहाप्रसंगिजानामश्लेषलाकप्राइरा
 वारवति ॥ अनपात्रमीतायां सुरतमहावाचित्तत्वा गरीजामहाप्रसंगिजानामश्लेषलाकप्राइरा
 वारवति ॥ पुष्पापात्रमीतायां गरीजतयासुरतमहावाचित्तत्वा नांगरीजामहाप्रसंगिजानामश्लेषला
 कप्राइरावारवति ॥ ३४ ॥ अलभुन्यतायांगरीजतयासुरतमहावाचित्तत्वा गरीजामहाप्रसंगिजानाम

श्रेयलाकप्राइरावारवति॥ शुन्यता शुन्यतायां गरीजतया सरुतमहावाधिसत्त्वा गरीजामहाप्रत्युगिना
नामश्रेयलाकप्राइरावारवति॥ महाशुन्यतायां गरीजतया सरुतमहावाधिसत्त्वानां गरीजामहा
प्रत्युगिना नामश्रेयलाकप्राइरावारवति॥ चतुर्मास शुन्यतायां गरीजतया सरुतमहावाधिसत्त्वा
गरीजामहाप्रत्युगिना नामश्रेयप्राइरावारवति॥ संस्कृत शुन्यतायां गरीजतया सरुतमहावाधि
सत्त्वा गरीजामहाप्रत्युगिना नामश्रेयलाकप्राइरावारवति॥ अनवजगु शुन्यतायां गरीजतया सर
रुतमहावाधिसत्त्वा गरीजामहाप्रत्युगिना लाकप्राइरावारवति॥ प्रकृति शुन्यतायां गरीजतया सर
रुतमहावाधिसत्त्वा गरीजामहाप्रत्युगिना लाकप्राइरावारवति॥ सर्वधर्म शुन्यतायां गरीजतया
सरुतमहावाधिसत्त्वा गरीजामहाप्रत्युगिना लाकप्राइरावारवति॥ सलक्ष्म शुन्यतायां गरीजतया

मं. पु
सु. गि
३७

सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सुगि जानामध्वेयं लाकप्राइरा वारवति ॥ अत्र पत्र पुन्यतायागरी
जगया सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सुगि जानामध्वेयं लाकप्राइरा वारवति ॥ अत्र पत्र पुन्यतायागरी
जगया सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सुगि जानामध्वेयं लाकप्राइरा वारवति ॥ अत्र पत्र पुन्य
तायागरी जगया सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सुगि जानामध्वेयं लाकप्राइरा वारवति ॥ अ
त्र पत्र पुन्यतायागरी जगया सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सुगि जानामध्वेयं लाकप्राइ
रा वारवति ॥ अत्र पत्र पुन्यतायागरी जगया सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सुगि जानामध्वे
यं लाकप्राइरा वारवति ॥ अत्र पत्र पुन्यतायागरी जगया सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सुगि
जानामलाकप्राइरा वारवति ॥ अत्र पत्र पुन्यतायागरी जगया सुखं महाबाधिसत्त्वागरी जामहापु सु

अत्र
३७

गिजनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ ॐ न्दियानां गरीजतयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहापुत्र
गिजनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ बलानां गरीजतयासुरतमहावाधिसत्त्वामहापुत्रगि
जनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ वाधमनां गरीजतयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहा
पुत्रगिजनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ आर्याणां गरीजतयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीज
महापुत्रगिजनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ धर्मानां गरीजतयासुरतमहावाधिसत्त्वा
गरीजामहापुत्रगिजनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ अथमात्मनां गरीजतयासुरतम
हावाधिसत्त्वामहापुत्रगिजनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ अष्टानां विमाकाणां गरीजत
यासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहापुत्रगिजनामध्वेयंलाकप्राइरावारवति॥ नवानुपर्व

म।पु
सुगि
३६

विहजसमापतिनीगरीलनयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहापुष्पगिजामामल्लेयलोकप्राड
रावार।वती॥गुनयतायानिमिहपुलिहितविमाकमृत्वाभिगरीजनयासुरतमहावाधिस
त्वागरीजामहापुष्पगिजामामल्लेयलोकप्राडरावारवती॥भृक्षानाविमर्हिमार्गनाग
रीजनयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहापुष्पगिजामामल्लेयलोकप्राडरावारवति॥ज
क्षानाविमर्हिमार्गनागरीजनयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहापुष्पगिजामामल्लेयल
कप्राडरावारवति॥समाधिनागरीजनयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहापुष्पगिजामा
मल्लेयलोकप्राडरावारवति॥अवलीमृत्वागरीजनयासुरतमहावाधिसत्त्वागरीजामहा
पुष्पगिजामामल्लेयलोकप्राडरावारवति॥दमतथागतवलीनागरीजनयासुरतमहावाधि

गु
३६

सत्त्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥ ^{या ३} मर्यादामां आवनिद्वयं चामां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥
महावाधिसत्त्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥ बर्तुसवे मध्येयं गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥
महावाधिसत्त्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥ बर्तुर्लपुनिसं विद्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥
महावाधिसत्त्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥ आवकयानस्य गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥
महावाधिसत्त्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥ पुन्यकयानस्य गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥
सत्त्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥ महायानस्य गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥
महावाधिसत्त्वानां गतिरिति जानामध्येयं लोकप्राइरावारवंति ॥ ॐ सर्वतः भगता ब्रह्मसिन्धुपुत्रा
नामा पत्राजिनामहा विद्याजहि ॥ अत्र यत मम सर्वसत्त्वानां च न का कना निगु फिं यत्रिगुलंप विगुहंपय

गता राधित वापद वृथा ॥ ऊष्णं पुन्यते वमपदिष्टान वयान संप्र स्थितस्य वाधिस त्व स्या गता राधित वा
पद वृथा ॥ वहिर्द्धा पुन्यते वमपदिष्टान वयान संप्र स्थितस्य वाधिस त्व स्या गता राधित वापद वृथा ॥ व
हिर्द्धा पुन्यते वमपदिष्टान वयान संप्र स्थितस्य वाधिस त्व स्या गता राधित वापद वृथा ॥ पुन्यता पुन्य
ते वमपदिष्टान वयान संप्र स्थितस्य वाधिस त्व स्या गता राधित वापद वृथा ॥ म हा पुन्यते वमपदि
ष्टान वयान संप्र स्थितस्य वाधिस त्व स्या गता राधित वापद वृथा ॥ पत्रमार्थ पुन्यते वमपदिष्टान वया
न संप्र तिष्ठितस्य वाधिस त्व स्या गता राधित वापद वृथा ॥ संस्कृत पुन्य वमपदिष्टान वयान संप्र स्थि
तस्य वाधिस त्व स्या गता राधित वापद वृथा ॥ ऊर्ध्वं सुकृत पुन्यते वमपदिष्टान वयान संप्र स्थितस्य
वाधिस त्व स्या गता राधित वापद वृथा ॥ ऊर्ध्वं पुन्यते वमपदिष्टान वयान संप्र स्थितस्य वाधिस त्व

मं. पु.
पं. जि.
३८

स्यागता राक्षित्या पदं वृत्त्या ॥ अनवजा शुभ्यते वम्पदि वानवयानसंप्रस्थितस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षि
तया पदं वृत्त्या ॥ अनवजा शुभ्यते वम्पदि वानवयानसंप्रस्थितस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षित्या प
दं वृत्त्या ॥ पुनरुति शुभ्यते वम्पदि वानवयानसंप्रस्थितस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षित्या पदं वृत्त्या ॥ स
र्वधर्म शुभ्यते वम्पदि वानवयानसंप्रस्थितस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षित्या पदं वृत्त्या ॥ स्वल कल शु
भ्यते वम्पदि वानवयानसंप्रस्थितस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षित्या पदं वृत्त्या ॥ अनपलर शुभ्यते वम्प
दि वानवयानसंप्रस्थितस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षित्या पदं वृत्त्या ॥ अनव शुभ्यते वम्पदि वानवया
नसंप्रस्थितस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षित्या पदं वृत्त्या ॥ स्वलाव शुभ्यते वम्पदि वानवयानसंप्रस्थि
तस्य वाधिसत्य स्यागता राक्षित्या पदं वृत्त्या ॥ अनव स्वलाव शुभ्यते वम्पदि वानवयानसंप्रस्थित

७३
३८

साधनाधिकारः ॥ ॥ एतद्वाक्यम् ॥ सर्वत आगता श्रीषट्चर्याल कलमृगमपु संगिजादि उपस्य
कायवाकचिरुसिद्धयः ॥ महाविपुद लुष नात्र सत्त्वमरुमं ॥ सये जात जलं कृत्या जया वज्र
नुधाययत् ॥ क मृगपिंगलं कार्य सिद्ध उप वि लुष त ॥ नील कपाल स व ह्य म ले पिंगल मा वज
त ॥ ऊं वादि संकु म्वाय मया वज्र कु म्वा हं ॥ सिंह नादं गतः काय्यायमा वि वज्र या गत ॥ किंचित्ताम
मा ॥ ॥ हय डी उ यान गत्र विदत् ॥ नाद व गुरु गं कार्य साधवा विपु साधनं ॥ ॥ चं उ वा धित तादृष्य
कर्म गत पुसा धकं ॥ ऊं जारणा स्प क विरुत्र म हा म कु पु सा धकं ॥ महापु संगि जा जपा काम्य त सर्वथा
षिता ॥ सिंह वद्वि वय धी नः सर्व कार्य र्थ साधका ॥ यगु म गतु व का मि भ त वा हा पु सा धक ॥ उ मा कु न
म हा म कुं जा प त स वि नि दि लुत् ॥ ऊं नात्र वा ज सं जा त म हि षा स वि रा व य त ॥ वज्र म लु ल मा ज र्द म

विष्णु
६८

हिष्ठा भवन लावना ॥ यत्किंचिद्वि वि विद्यं तस्य वा न कर्तृपित्र ॥ रुक्मा ना ला व य द्वा मान्म महिष मं ग सा द न ॥
भैरव मं ग पु व का सी दं ॥ य मा पि सा ध नं ॥ ॐ ह्रीं कालं महा मं तु महा महिष बा ह नं ॥ अज धि व क स प
र्ण ह स्म ध लि ग वि ग ह ॥ सम ज्प व र्णा तु ग त मा क्रा न्तु ज सा ग ल म् ॥ न भ स्य सा ध न व ष का ठि बा हाः पु
सा ध क ॥ वि कृ ता न न महा मं तु ई काल स र व वि रं ॥ वि कृ ता न ना ह हा हि हि हं हं ह ह हा हा ह हः सा हा ॥
स म य सा ध न व ष स र्व का र्य पु सि द्ध य न ॥ म कृ ति न्नु हा का ल नि ल व ज म इ त्थं ॥ महा मा स ह यं व
व ग ज वा पि वि श प त् ॥ ए म ज्प कृ कृ ठ वे य य ज षु म व च ॥ महा ते ज न वा र्ण ग म नि त्रि मि त्तु ष ल पा ठ य
न ॥ व स मा न उ ग त् स र्व न स्या र्ण ज न मा ग त ॥ ला व ल सिं ध वा जं व वि ल पं तु ग ये व च ॥ ॐ दे व र्ण स मा
ध न क र्ण पु ज स न ॥ न न ना द ति त ग म ॥ ॐ अ तु क स मा न य न ॥ वि ष ज् र त न भ कृ षु न भ ग्द व र्ण

७२
६८

नमो ॥ महासूक्तं तु पातयं महावज्रात् न तं ॥ १ ॥ अथ योगवज्रं ॥ अथ सूर्यरक्तसमपातयत ॥ ॥
 ॐ नित्यं तं भगतां श्रीषसीतां पुता न माप न जिता महापुण्या जिता चर्या समयासाधना नामा
 धिका ॥ ॥ अथ रक्तगवा सर्वत भगतां श्रीष महापुत्र समय महाव विद्या समाधि समा पुष्प महापुष्प
 गिता समाधि समा पद्यं दं पजागीता मृदानया मात ॥ ॐ सर्वत भगतां श्रीष आपलक्ष्म मृतु मे ॥
 यन आप पुण्या नृत्य सि सिद्धि मा प्रयात ॥ न इत न विलयी त न व दीर्घ न रुत द ॥ न किं विं क
 यन मकु उ पमा ॥ अतु मं ॥ महिष मानुष दिव्य द गुरु पंवा दिम वव ॥ यव जातु अतु सं गृह्य जा
 पमाला पुता धने ॥ ना सिमा सिव तुदि ॥ अप यमास्य नल पयत ॥ प वा गता समा यक्त जाप सिद्धि क न प
 तं ॥ ॐ नित्यं नित्यं लितां यागी यमाली ता वय द ॥ ॥ अथ ये मानुष सं ॥ ॐ नित्यं नित्यं व विलय यत ॥

मं पु
सं जि
७०

अयं मातुल रूता नां किनी नां सरु रुक ॥ मा जयतु पत संध्या ठयं मा लिष्य यागत ॥ लक जाप
नया गमा सर्व कर्म क जा लो सो ॥ का ठि जाप ल सिद्धि सात्का क भा का ठि पं वं ॥ पु ति दिन पु
ति मा स पु ति स व ल स ज न भा ॥ व र्तुः ष ष्टि व लि दं द्या द व तु ष ष्टि क पु न ॥ य लि चि त्या य म नि
पुं य लि चि त पु ल य न भा ॥ अ न्य वा र क न स र्व अ गु द या य मा त्रि लं ॥ अ भा त स पु व का मि गु न
वे दा नु द की ल ॥ अ न्ना नः ॥ क यं वे व सि द्ध य स र्व क र्म ल ॥ नि र्या त य कू दा त्मा न् रु रु रा त्र
प कू ज न ॥ ५ ॥ अ वा मी क ज वे व पु नं वा ल रि य न भा ॥ उ न नी रु गी नी वा पी रा गि ने वे व त थे व
व ॥ व स न ना वि दि वे व रु वा वा ज् वा म नं ॥ गृ ह पि ० स र्ग ५ च रा य वा यं त थे व व ॥ र वं
वा र ज ले वे व पु द या गु न व व ति ॥ ॥ ० ॥ ति स र्व न भा ग ता ष्टि सि ता त पु ता ना मा प या

७२
७०

आरुविष्यति॥ चतुर्जमीति वज्रकुलकाठिनियुतभगसहस्रादि॥ विद्यादवगानित्यंसनसंसमिन्नका
वज्रलुपिंकनीयति॥ चतुर्जमीति वज्रकुलकतिवज्रइति किंकनीयपत्रिकाययिष्यति॥ त
षामपीप्रियारुविष्यति॥ मनःशपथनकदाचिद्यकत्वं नयकत्वं नपुनत्यनपि भवत्वं नपुठ
नत्वं नकठपुनत्वं॥ नमस्त्वयापिदुपुननरुविष्यति॥ गगनदीवाल्क्यपुमानसुख्यापुमयानाः
श्चारुगवतापुष्कलसमन्तागतारुविष्यति॥ यः सुमास्यतथागताष्टुषसितापुतामामा
पत्राङ्गितामहापुष्टिगिर्यापव्ययिनमाहापात्रमिगयवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गमहापुनं
गिर्यायांरूपपत्रिप्लयति॥ १ ॥ सर्वगथागताष्टुषवर्षयिनमहापात्रमिगयवाधिसत्त्वायद्
गमहापुष्टिगिर्यायांवेदनापत्रिप्लयति॥ सर्वगथागताष्टुषवर्षयिनमहापात्रमिगयवाधिसत्त्वा

यइ नमहाप्रसंगि जायां सहापत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगता षुषपययनमहापात्रमिगयं वाधिसत्वा
नां यइ नमहाप्रसंगि जायां विज्ञानपत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगता षुषपययनमहापात्रमिगयं वाधिसत्वा
वाधिसत्वा नामहासत्वा नां यइ नमहाप्रसंगि जायां वाधिसत्वा पत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगता षुषपययन
नमहापात्रमिगयं वाधिसत्वा नामहासत्वा नां यइ नमहाप्रसंगि जायां वाधिसत्वा पत्रिपुत्रयंति ४
सर्वतः भगता षुषपययनमहापात्रमिगयं वाधिसत्वा नामहासत्वा नां यइ नमहाप्रसंगि जा
यां वाधिसत्वा पत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगता षुषपययनमहापात्रमिगयं वाधिसत्वा नामहा
सत्वा नां यइ नमहाप्रसंगि जायां वाधिसत्वा पत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगता षुषपययन
महापात्रमिगयं वाधिसत्वा नामहासत्वा नां यइ नमहाप्रसंगि जायां वाधिसत्वा पत्रिपुत्रयंति ४

मः पु

संति

७२

सर्वतथागतानां पञ्चपर्यायनमहापात्रमित्येकं वाचि सत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुरुषं गिजायाः
मनः पत्रिप्लयंति ॥ सर्वतथागतानां पञ्चपर्यायनमहापात्रमित्येकं वाचि सत्त्वानां महासत्त्वा
नां यद्गममहापुरुषं गिजायां उपस्थापत्रिप्लयंति ॥ सर्वतथागतानां पञ्चपर्यायनमहापात्रमि
त्येकं वाचि सत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुरुषं गिजायाः श्रालविज्ञानपत्रिप्लयंति ॥ सर्वतथा
गतानां पञ्चपर्यायनमहापात्रमित्येकं वाचि सत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुरुषं गिजायां कि
क्षाविज्ञानपत्रिप्लयंति ॥ सर्वतथागतानां पञ्चपर्यायनमहापात्रमित्येकं वाचि सत्त्वानां महासत्त्वानां
यद्गममहापुरुषं गिजायां कायविज्ञानपत्रिप्लयंति ॥ सर्वतथागतानां पञ्चपर्यायनमहापात्रमि
त्येकं वाचि सत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुरुषं गिजायां कायविज्ञानपत्रिप्लयंति ॥ सर्वतथागतानां

७३
७२

श्रीष पयथिनमहापात्रमित्तयवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीयइतमहापुत्रं गिजायां मना विह्वलनं पत्रिपूज
यति॥ सर्वतथागता श्रीष पयथिनमहापात्रमित्तयवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीयइतमहापुत्रं गिजा
यां वदुःसस्यभस्यापूजापुल्ययति॥ सर्वतथागता श्रीष पयथिनमहापात्रमित्तयवाधिसत्त्वानां महा
सत्त्वानीयइतमहापुत्रं गिजायां ॐ न सस्यभस्यापत्रिपूजयति॥ सर्वतथागता श्रीष पयथिन
महापात्रमित्तयवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीयइतमहापुत्रं गिजायां द्यालसस्य भस्यापत्रिपूजयति॥
सर्वतथागता श्रीष पयथिनमहापात्रमित्तयवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीयइतमहापुत्रं गिजायां
उक्तासस्य सस्यापत्रिपूजयति॥ सर्वतथागता श्रीष पयथिनमहापात्रमित्तयवाधिसत्त्वानां
महासत्त्वानीयइतमहापुत्रं गिजायां वायभस्यासस्यापत्रिपूजयति॥ सर्वतथागता श्रीष पयथिन

मः पु
सं गि
७३

महापात्रमित्ययं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुत्रं गिनायां मनःसंस्थं स्यापत्रिपुत्रयति ॥ सर्वत
भागताष्टुषपयार्थिनमहापात्रमित्ययं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुत्रं गिनायां चक्रः सं
स्थं पुत्रं यवदनापत्रिपुत्रयति ॥ सर्वतथा गताष्टुषपयार्थिनमहापात्रमित्ययं वाधिसत्त्वा
नामहासत्त्वानां यद्गममहापुत्रं गिनायां सस्यं पुत्रं यवदनायापत्रिपुत्रयति ॥ सर्वत
भागताष्टुषपयार्थिनमहापात्रमित्ययं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुत्रं गिनायां
द्यालसं सपुत्रं यवदनायापत्रिपुत्रयति ॥ सर्वतथा गताष्टुषपयार्थिनवाधिसत्त्वानां महा
सत्त्वानां यद्गममहापुत्रं गिनायां डिनासंस्थं पुत्रं यवदनायां पत्रिपुत्रयति ॥ सर्वतथा गताष्टु
षपयार्थिवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यद्गममहापुत्रं गिनायां सस्यं पुत्रं यवदनापत्रिपुत्रयति ॥

७३
७३

महापात्रमित्यंयं

सर्वतः भागताष्टौ षडयि वा चित्त्वा नाम महासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायी मनः सस्यभपुत्र्य
वदनायापत्रिपुत्रयति॥ सर्वतः भागताष्टौ षडयि च नमहापात्रमित्यंयं वा चित्त्वा नाम महासत्त्वा
नीय इतमहापुत्रं गिजायी पृथ्वी भुपत्रिपुत्रयति॥ सर्वतः भागताष्टौ षडयि च नमहापात्र
मित्यंयं वा चित्त्वा नाम महासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायी शपभुपत्रिपुत्रयति॥ सर्वतः भाग
ताष्टौ षडयि च नमहापात्रमित्यंयं वा चित्त्वा नाम महासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायी तज्ज्वा
भुपत्रिपुत्रयति॥ सर्वतः भागताष्टौ षडयि च नमहापात्रमित्यंयं वा चित्त्वा नाम महासत्त्वानीय
इतमहापुत्रं गिजायी वायु भुपत्रिपुत्रयति॥ सर्वतः भागताष्टौ षडयि च नमहापात्रमित्यंयं वा
चित्त्वा नाम महासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायी शकाभभुपत्रिपुत्रयति॥ सर्वतः भागताष्टौ ष

म ५७
सु ३४

पर्यायिनमहापात्रमितायां वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुण्यं गिजायां विज्ञानं चतुपत्रिपत्र
यति ॥ सर्वतः भागताष्टुष पर्यायिनमहापात्रमित्युयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुण्यं गिजा
यां ऋविद्यायां पत्रिपत्रयति ॥ सर्वतः भागताष्टुष पर्यायिनमहापात्रमित्युयं वाधिसत्त्वानां महा
सत्त्वानां य इतमहापुण्यं गिजायां सत्त्वानां पत्रिपत्रयति ॥ सर्वतः भागताष्टुष पर्यायिनमहापात्रमित
यं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुण्यं गिजायां विज्ञानं स्यापत्रिपत्रयति ॥ सर्वतः भागताष्टु
ष पर्यायिनमहापात्रमित्युयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुण्यं गिजायां नामत्रपस्याप
त्रिपत्रयति ॥ सर्वतः भागताष्टुष पर्यायिनमहापात्रमित्युयं वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतम
हापुण्यं गिजायां षडयतनपत्रिपत्रयति ॥ सर्वतः भागताष्टुष पर्यायिनमहापात्रमित्युयं वाधिसत्त्वा

ग ३
३४

नामहासत्त्वानां यद्गन्तमहापुण्यं गिजायां सस्य भस्माप विप्रजयति ॥ सर्वत भागता शुभ पयथिनमहापात्र
मिथुयवाधिसत्त्वा नामहासत्त्वा नां यद्गन्तमहापुण्यं गिजायां वदनाप विप्रजयति ॥ सर्वत भागता शु
भा पयथिनमहापात्र मिथुयवाधिसत्त्वा नामहासत्त्वा नां यद्गन्तमहापुण्यं गिजायां रुद्र पवि प्रजयति ॥ य
सर्वत भागता शुभ पयथिनमहापात्र मिथुयवाधिसत्त्वा नामहासत्त्वा नां यद्गन्तमहापुण्यं गिजायां
उपायदानपत्रा प्रजयति ॥ सर्वत भागता शुभ पयथिनमहापात्र मिथुयवाधिसत्त्वा नामहासत्त्वा
नां यद्गन्तमहापुण्यं गिजायां रुद्रा पवि प्रजयति ॥ सर्वत भागता शुभ पयथिनमहापात्र मिथु
यवाधिसत्त्वा नामहासत्त्वा नां यद्गन्तमहापुण्यं गिजायां अतिपत्रा प्रजयति ॥ सर्वत भागता शुभ प
यथिनमहापात्र मिथुयवाधिसत्त्वा नामहासत्त्वा नां यद्गन्तमहापुण्यं गिजायां ऊनामजल पवि प्रजयति ॥

मः पु
सं जि
७५

सर्वतः भगताः पूषपययि वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइतमहापुत्रं गिजायां दानपात्रमीतायां पत्रिपु
त्रयंति ॥ सर्वतः भगताः पूषपययि न वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइतमहापुत्रं गिजायां भीलपात्र
मीकायां पत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगताः पूषपययि न वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइतमहापु
त्रं गिजायां कृतिपात्रमीतायां पत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगताः पूषपययि न वाधिसत्त्वानां महास
त्त्वानां यइतमहापुत्रं गिजायां वीर्यपात्रमीयां पत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगताः पूषपययि न वा
धिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइतमहापुत्रं गिजायां अनपात्रमीतायां पत्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः
भगताः पूषपययि न वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइतमहापुत्रं गिजायां पुहपात्रमीयां प
त्रिपुत्रयंति ॥ सर्वतः भगताः पूषपययि न वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइतमहापुत्रं गिजा

७३
७५

जायां नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥ सर्वतः भागतां पूषपययिन वाधिसत्त्वानीमहासत्त्वानीय इ
तमहापुत्रं गिजायां बहिः ॥ नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥ सर्वतः भागतां पूषपययिन वाधिसत्त्वानी
महासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायां नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥ सर्वतः भाग
तां पूषपययिन वाधिसत्त्वानीमहासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायां नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥
सर्वतः भागतां पूषपययिन वाधिसत्त्वानीमहासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायां नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥
सर्वतः भागतां पूषपययिन वाधिसत्त्वानीमहासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायां नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥
सर्वतः भागतां पूषपययिन वाधिसत्त्वानीमहासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायां नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥
सर्वतः भागतां पूषपययिन वाधिसत्त्वानीमहासत्त्वानीय इतमहापुत्रं गिजायां नृणां मम सन्ध्यायां पूजयति ॥

मः पु

सं जि

७६

महासत्त्वानां य इतमहापुं गिजायां नृसं नृ शुन्यतायां पत्री प्रजयति ॥ सर्वत भागता ष्टौ षपयथिनवा
धिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुं गिजायां नृनवका गु शुन्यतायां पत्री प्रजयति ॥ सर्वत भाग
ता ष्टौ षपयथिनवा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुं गिजायां नृनवका ल शुन्यतायां पत्री प्रज
यति ॥ सर्वत भागता ष्टौ षपयथिनवा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुं गिजायां प्रकृति शुन्य
तायां पत्री प्रजयति ॥ सर्वत भागता ष्टौ षपयथिनवा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुं गि
जायां सर्वधर्म शुन्यतायां पत्री प्रजयति ॥ सर्वत भागता ष्टौ षपयथिनवा धिसत्त्वानां महासत्त्वानां य
इतमहापुं गिजायां तलकन शुन्यतायां पत्री प्रजयति ॥ सर्वत भागता ष्टौ षपयथिनवा धिस
त्त्वानां महासत्त्वानां य इतमहापुं गिजायां नृपलरव शुन्यतायां पत्री प्रजयति ॥ सर्वत भाग

गु ३
७६

ताप्राप्यपर्यायनवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीय इतमहाप्रसंगिजायां कृतावभुन्यतायांपत्रीपूजय
ति॥ सर्वतभागताप्राप्यपर्यायनवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीय इतमहाप्रसंगिजायां कृतावभुन्य
तायांपत्रीपूजयति॥ सर्वतभागताप्राप्यपर्यायनवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीय इतमहाप्रसंगिजा
यां कृतावभुन्यतायांपत्रीपूजयति॥ सर्वतभागताप्राप्यपर्यायनवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीय इ
तमहाप्रसंगिजायां कृतावभुन्यतायांपत्रीपूजयति॥ सर्वतभागताप्राप्यपर्यायनवाधिसत्त्वा
नां महासत्त्वानीय इतमहाप्रसंगिजायां स्मृत्पस्थानानि पत्रिपूजयति॥ सर्वतभागताप्राप्य
पर्यायनवाधिसत्त्वानीय इतमहाप्रसंगिजायां सम्यक्प्रहाभानि पत्रिपूजयति
ति॥ सर्वतभागताप्राप्यपर्यायनवाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीय इतमहाप्रसंगिजायां मधिपा

मः पु
सं गि
२१

दापत्रिपुत्रयति ॥ सर्वत भागता षूष पर्यायिन वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतम हापुत्रु गि जायी ॥
दियात्रीपत्रापुत्रयति ॥ सर्वत भागता षूष पर्यायिन वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतम
हापुत्रु गि जायी वजात्रिपत्रापुत्रयति ॥ सर्वत भागता षूष पर्यायिन वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य
इतम हापुत्रु गि जायी वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतम हापुत्रु गि जायी ॥ सर्वत भागता षूष पर्यायिन वाधिसत्त्वानां महा
सत्त्वानां य इतम हापुत्रु गि जायी आर्याष्टागत्रिपत्रिपुत्रयति ॥ सर्वत भागता षूष पर्यायिन
वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतम हापुत्रु गि जायी आर्यासत्त्वात्रिपत्रिपुत्रयति ॥ सर्वत भागता
षूष पर्यायिन वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतम हापुत्रु गि जायी ॥ आनिपत्रापुत्रयति ॥ स
र्वत भागता षूष पर्यायिन वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानां य इतम हापुत्रु गि जायी अपमाना

७३
२१

पञ्चपूजति ॥ सर्वत भागता पूष पययिन वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीय इत महापुत्रु गिजाया
आत्रुपपञ्चपूजयति ॥ सर्वत भागता पूष पययिन वाधिसत्त्वानां महासत्त्वानीय इत महा
पुत्रु गिजाया विभाक्का पयिपूजयति ॥ सर्वत भागता पूष पययिन वाधिसत्त्वानीय महास
त्त्वानीय इत महापुत्रु गिजाया समापुति पयिपूजयति ॥ सर्वत भागता पूष पययिन वाधिस
त्त्वानीय महासत्त्वानीय इत महापुत्रु गिजाया विभाक्का निपयिपूजयति ॥ सर्वत भागता
पूष पययिन वाधिसत्त्वानीय महासत्त्वानीय इत महापुत्रु गिजाया ऋहिहापयिपूजयति ४
सर्वत भागता पूष पययिन वाधिसत्त्वानीय महासत्त्वानीय इत महापुत्रु गिजाया समाधिप
यिपूजयति ॥ सर्वत भागता पूष पययिन वाधिसत्त्वानीय महासत्त्वानीय इत महापुत्रु गिजा

मः पु
सुगि
१८

या अत्र नी मर्या ना पत्रा प्रजयति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि न वा चिसत्त्वानां महासत्त्वानां
यइत महापु सुगि जायीद भन भगर्तु बलानि पत्रा प्रजयति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि
यन वा चिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइत महापु सुगि जायीद बलानि पत्रा प्रजयति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि
यति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि न वा चिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइत महापु सुगि जा
यीद भन भगर्तु बलानि पत्रा प्रजयति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि न वा चिसत्त्वानां म
हासत्त्वानां यइत महापु सुगि जायीद महाकृत्स्न पत्रा प्रजयति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि
ययि न वा चिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइत महापु सुगि जायीद भगर्तु बलानि पत्रा प्रजयति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि
न वा चिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइत महापु सुगि जायीद भगर्तु बलानि पत्रा प्रजयति ॥ सर्वत आगता षूष पयसि न वा चिसत्त्वानां महासत्त्वानां यइत महा

१३
१८

पुत्रु गिजायी अतापतिरुलपविप्रययति॥ सर्वत भगता षूष पर्यायनवाधिसत्त्वानामहासत्त्वा
नाय इतमहापुत्रु गिजायां सकृदापिरुलतपविप्रययति॥ सर्वत भगता षूष पर्यायनवा
धिसत्त्वानामहासत्त्वानाय इतमहापुत्रु गिजायां कनागमिरुलतपविप्रययति॥ सर्वत भ
गता षूष पर्यायनवाधिसत्त्वानामहासत्त्वानाय इतमहापुत्रु गिजायां पुत्रु कवाधिसविप्रय
ति॥ सर्वत भगता षूष पर्यायनवाधिसत्त्वानामहासत्त्वानाय इतमहापुत्रु गिजायां मार्ग कावह
तायां पविप्रययति॥ सर्वत भगता षूष पर्यायनवाधिसत्त्वानामहासत्त्वानाय इतमहापुत्रु गि
जायां पविप्रययति॥ सर्वत भगता षूष पर्यायनवाधिसत्त्वानामहासत्त्वानाय इतमहापुत्रु गि
जायां सर्वाकावहतापविप्रययति॥ सर्वत भगता षूष पर्यायनवाधिसत्त्वानामहासत्त्वानाय इत

सुतिनामहाविद्यानाह्नी अत्रयमान ॥ पूजाधीपूजुपुर्तिलसंत ॥ गायपुष्पवत्पुर्तिलसंत ॥ ॐ
न अत्वास्त्यावलीलाक अतु उपपद्यते ॥ सर्वजागदेषमाहमानविगतदयविजगतरविष्यती ॥
यः कृतिमनुष्यामात्रपुमात्रसर्वश्रुपदवापसर्गपायासपत्रचक्रागमनषुतस्यलगावंगा
हं संव्यक्तस्त्वद्वत्सर्वतभागताष्टीषसीतापुपुजानामापत्राजिनामहापुसुतिनामहाविद्या
नाह्नी अत्रयमानापिनांकु स्यामहातासत्कायमहातावपुजाकृतामहावतासत्कायमसर्वनग
लगावपुषुपवमयत ॥ गुरुमिवाः नगलवाः निगमना ॥ ऊनपुदवा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ पर्वतवा गुरुवा ॥
गुरुवा ॥ ॐ ॐ सर्वतभांगता ॥ ॐ नामपत्राजिनामहापुसुतिनाया महाविद्यानाह्नीमहातास
त्कायनपुवमयन ॥ पुवमिनामागुलदग ॐ ॐ ॐ ॐ कृत्वा रविष्यति ॥ सर्वश्रुपदवापसर्गपाया
मादि

१०५

इति नवलोकायति नयं मय्यग ॥ इवला कित मर्द्धा नाम समाधी ॥ गुरु कृतमा धर्म धातु निय
न नाम समाधी ॥ यत्तु समाधी स्थित्वा सर्व समाध्या धर्म धातु निष्पद्य गच्छति नयं म्
य्यग ॥ धर्म धातु नियत नाम समाधि ॥ गुरु कृतमा नियत धंज कुरु नाम समाधी ॥ यत्तु
कृतमा वडापमाना समाधी ॥ न नियत धंज अजयति ॥ नयं मय्यग नियत धंज
कुरु नाम समाधी ॥ गुरु कृतमा वडापमाना समाधी ॥ यत्तु समाधी स्थित्वा सर्व समाधा
नारिदित नयं मय्यग वडापमाना समाधी ॥ गुरु कृतमा धर्म पुव न मडा नाम समा
धि ॥ यत्तु समाधी स्थित्वा सर्व समाधी जात सुपुतिष्ठिता नाम समाधि ॥ यत्तु समाधी स्थि
यत्तु समाधी स्थित्वा सर्व समाधी न धर्म पुव न मडा पुव नयति नयं मय्यग धर्म पुव न मडा नाम समाधि ॥ ४

त्वा सर्वसमाधिनां समाधी जाजस्रपुतिष्ठानपुतिष्ठति श्रयम्यत ॥ समाधिजाजस्रपुतिष्ठिता नाम स
 माधि ॥ गुरुकृतमजस्मिपुष्का नाम समाधि ॥ यत समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधीनां त्रिभिर्वचनस्य नागा
 श्रयम्यत ॥ त्रिभिर्पुष्का नाम समाधि ॥ गुरुकृतमावजगृही नाम समाधि ॥ यत समाधौ स्थि
 त्वा सर्वसमाधीनां वलवृहो अत्रयति श्रयम्यत वलवृहो नाम समाधी ॥ गुरुकृतमासमृद्धा
 नाम समाधि ॥ यत समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधया समुदागच्छ श्रयम्यत ॥ समुद्गता नाम समाधी ॥
 गुरुकृतमाः निरुक्ता निदर्शनपुवला नाम समाधि ॥ यत समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधीनां निरुक्तिनि
 दर्शनपुविशति श्रयम्यत ॥ निरुक्तिनिदर्शनपुवला नाम समाधि ॥ गुरुकृतमाविवचनपुव
 ला नाम समाधि ॥ यत समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधीनां कथिवचननाम ध्रुयनिपुविशति श्रयम्य
 त कथिवचनसंपुवला नाम समाधि ॥ गुरुकृतमः दिग्विलाकिना नाम समाधि ॥ यत समाधौ स्थि

ता सर्वसमाधिनां दिगीवला किं यम्यत ॥ दिग्बिबला किं नामसमाधि ॥ गुरुकर्म मन्त्राध्याय जल मृदा
नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां मृदा आध्यायति जयम्यत ॥ आध्याय जल मृदा
नामसमाधि ॥ गुरुकर्म मन्त्राध्याय जल मृदा नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां
संप्रति जयम्यत ॥ मन्त्राध्याय नामसमाधि ॥ गुरुकर्मः सर्वधर्मसमवसज
ल सागज मृदा नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधय ॥ संप्रति समवसज ल साग
कति जयम्यत सर्वधर्म समवसज ल सागज मृदा नामसमाधि ॥ गुरुकर्मः आकाश स्ना
जल नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां आकाश स्ना जल गवा रुत्रति जयम्य
यतः आकाश स्ना जल नामसमाधि ॥ गुरुकर्मः मृदा वती नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थि

पः ७
सूक्ति
८२

१ लक्ष्मी

त्वा सर्वसमाधिनां तज्जासवधिमावद्वलति गता व्यगते जीवता नामसमाधि ॥ तत्तु कर्ममः अपुमा
भवनामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधानां अपुमानामव लक्ष्मी गता व्यगते अपुमाभव
लक्ष्मी नामसमाधि ॥ तत्तु कर्ममः सगम नामव लक्ष्मी नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधि
नां संगव हि गतामुपाययनि जावर्द्ध वलासु गता व्यगते सगम वलक्ष्मी नामसमाधि ॥ तत्तु कर्म
मः ॥ सर्वधर्मपुर्व हि समुद्धदा नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा समाधानां सर्वधर्मपुर्व व्यगते पुर्व
हि समुद्धदा नामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा समाधिनां सर्वधर्मपुर्व व्यगते पुर्व हि समुद्धदा
नामसमाधि ॥ तत्तु कर्ममः जलं जहा नामसमाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधानां निमि
शान्यपि उहाति प्राणवान्वा निमिशानिके नामसमाधि ॥ जलं जहा नामसमाधि ॥ तत्तु कर्म

७३
८२

मावेनाचनानामसमाधिः॥ यत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनामयत्नात्संति तत्पतिविनाचति तनायत्तवेना
चनानामसमाधिः॥ **गुरुकृतमात्रिमिरानामसमाधिः** यत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां न कश्चिद्वर्म्म
मेषति तनायत्तः श्रुतिमिषानामसमाधिः॥ २८ ॥ **गुरुकृतमात्रिकृतस्थितानामसमाधिः** यत्समाधौ
स्थित्वा सर्वसमाधिनां न कश्चिद्वर्म्म समन्वयपथमिति तनायत्तः॥ श्रुतिकृतस्थितानामसमाधिः॥ **गुरु**
कृतमात्रिभूतानामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां विरुद्धवत्सिकाधर्म्मप्रवर्द्धयति
तनायत्तविरुद्धवतानामसमाधिः॥ **गुरुकृतमविमलपुदीपानामसमाधिः** यत्समाधौ स्थित्वा सर्वस
माधिनां पुदीपं अजयति तनायत्तविमलपुदीपानामसमाधिः॥ **गुरुकृतभाननकपुराणामसमाधिः**
यत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां जननकपुराणमिति तनायत्तजननकपुराणामसमाधिः॥ **गुरुक**

मः पु
सु जि
७३

नमः पुलाकाना मसमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां पुलाकाना मसमाधि॥ ननु कतमः ।
समकावराणां नामसमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां सूरूपमिलनसर्वसमाधिसूत्रा-
न्यवरासक्तं नो व्यत समकावराणां नामसमाधि॥ ननु कतमः ॥ शुद्धसाधना मसमाधि॥ यत्तु समा-
धौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां शुद्धसाधना मसमाधिमन्त्राणां नित्यं शुद्धसाधना मसमाधि॥ ननु कतमा-
त्रिकानां नामसमाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा समाधिनां त्रिमन्त्रवर्तिना व्यत त्रिकानां नामसमाधि॥
ननु कतमाविद्युत्पदिषा नामसमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां प्रदिषा कानां नित्यं त्रि-
कानां नामसमाधि॥ ननु कतमः वज्रमल्लासमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां मल्लानि-
धाय त्रयं त्रयमव्यत वज्रमल्ला नामसमाधि॥ ननु कतमः शक्यापगमा नामसमाधि॥ यत्तु समा-

७३
७३

ओ स्थित्वा सर्वसमाधिनां कथं समनुपपन्नमिति ॥ तत्राच्यते कथं यत्पगतनामसमाधिः ॥ तदुक्तमः त्रिधा
तत्रा नामसमाधिः ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां कथं यत्पगतनामसमाधिः न पुनरुपपन्नमिति तत्रा
च्यते त्रिधा तत्रा समाधिः ॥ तदुक्तमः अलाककनामसमाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां
यां नां मा लाककनामिति तत्राच्यते लाककनामसमाधिः ॥ तदुक्तमः काजाकाजा नामसमाधिः ॥ यत्तु समा
धौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां कालगतां क्रियां कनामिति तत्राच्यते काजाकाजा नामसमाधिः ॥ तदुक्तमः ज्ञान
कतु नामसमाधिः ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां ज्ञानकतु समनुपपन्नमिति ॥ तत्राच्यते ज्ञानकतु ना
मसमाधिः ॥ तदुक्तमः वज्रपुमाना नामसमाधिः ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां वज्रपुमाना नामसमाधिः स
माधि मपि समनुपपन्नमिति तत्राच्यते वज्रपुमाना नामसमाधिः ॥ तदुक्तमः विहस्य स्थितिर्नामसमाधिः ॥

मः पु
सु नि
८८

यत्तत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां विरुद्धं यत्ति न विवर्तनं न पुनरवतिरासं न विद्यातमापत्सं न
न नास्यैव रूति विरुद्धं मिमितं नाच्यते ॥ विरुद्धं स्थिति नाम समाधि ॥ तत्तु कर्ममः समकालाका नाम
समाधि ॥ यत्तत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां समकालाकं समन्वयं धितं नाच्यते ॥ समकालाका
नाम समाधि ॥ तत्तु कर्ममः संप्रतिष्ठितं नाम समाधि ४ यत्तत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां संप्रति
ष्ठितं रवन्ति नाच्यते संप्रतिष्ठितं नाम समाधि ॥ तत्तु कर्ममः जलकाठि नाम समाधि ॥ यत्तत्समाधौ
स्थित्वा सर्वसमाधिनां समकाठलकाठिनिवसदृशं कर्तनाच्यते जलकाठि नाम समाधि ॥ तत्तु क
र्ममः वज्रधर्ममूढा समाधि ॥ यत्तत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां मृदिता मृपादायतनाच्यते वज्र
धर्ममूढा नाम समाधि ॥ तत्तु कर्ममः सर्वधर्म समका नाम समाधि ॥ यत्तत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमा

७३
८४

धिना वाचकमिदमसमस्तानि त्रिंशत्समस्तपञ्चतितनायत॥ सर्वधर्मसमस्तानां मसमा
 धि॥ गुरुकृतम॥ सर्वधर्माद्यगुणं नामसमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वधर्मभगवत्कृति
 सर्वधर्मभगवत्कृतनायत सर्वधर्माद्यगुणं नामसमाधि॥ गुरुकृतः जतिउहा नामसमाधि॥
 यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाध्या जतिउहा तितनायत जतिउहा नामसमाधि॥ गुरुकृतमधि किं त्रिंशत्
 नामसमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिना विधि त्रिंशत्ति विधमयति तनायत विधि त्रिंशत्
 मसमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाध्यानां विधि त्रिंशत्ति विधमयति तनायत विधि त्रिंशत्
 नामसमाधि॥ गुरुकृतमः सर्वधर्मपदरदा नामसमाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाध्यानां
 सर्वधर्मपदानि पुतिवर्ततः तनायत॥ सर्वधर्मपदपुरुदा नामसमाधि ४ गुरुकृतमः समा

मः पु
पुं
८५

क जा नाम समाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिना समा कृत्वा नाम समाधिपु तिल त्वात्तना यत्तु
मा क जा नाम समाधि॥ यत्तु कृतम्॥ अ क जा पगता नाम समाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वस
माधीना अकात्र कृत्वा मपिना पलरुपे तना यत्तु॥ अ क जा पगता नाम समाधिः यत्तु समाधौ स्थि
त्वा सर्वसमाधिना अकाल कृत्वा मपिना पलरुपे तना यत्तु॥ अ क जा पगता नाम समाधि॥ यत्तु
कृतम्॥ अत्र मय लब्धे यत्तु नाम समाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधीना विकारा ना पत्रत्वात्त
ना यत्तु अ प का जा नाम समाधि॥ यत्तु कृतम्॥ नाम निमित्ताना प्रवेष्टु नाम समाधि॥ यत्तु समा
धौ स्थित्वा सर्वसमाधिना निमित्ताना पलरुपे तना नाम निमित्ताना प्रवेष्टु नाम समाधि॥ यत्तु
कृतम्॥ अत्रि कृत वा विना नाम समाधि॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिना निकेतना नाम स

७२
८५

माधितनायते॥ अनीकतवाजीनामसमाधि॥ तलुकतमः मिमिपगतानामसमाधि॥ यगस
माधेस्थित्वासर्वसमाधिनानिमिपविशुधयगितनायतेसिमिपगतानामसमाधि॥ तलुक
तमः॥ अत्रिगुवतानामसमाधि॥ यगसमाधेस्थित्वासर्वसमाधिनोवात्रिगुवतासमनूपधति
तेनायतेवात्रिगुवतानामसमाधि॥ तलुकतमः॥ अयलानामसमाधि॥ यतसमाधेस्थित्वासर्वसमा
धिनोवात्रितनसमनूपधतितेनायतेअयलानामसमाधि॥ तलुकतमः विषयतीर्लानामसमाधि॥
तलुकतमः॥ सर्वगुलसंययानामसमाधि॥ यगसमाधेस्थित्वासर्वगुलानां सर्वसमाधानांसंययताम
नूपाप्रानितनायतेसर्वगुलसंययानामसमाधि॥ तलुकतमः॥ विरुधितिनित्तिनामसमाधि॥
यगसमाधेस्थित्वासर्वसमाधानां विरुधनूपवर्तुतनायते॥ विरुस्थितिनित्तिनामसमाधि॥

प. ७
स. ७
८६

तत्तुक्तम॥ गुरुपुष्पिगुदिनामसमाधि॥ यत्तुसमाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिना गुरुपुष्पिगु
दिपुनिलरंगतनायत्तु गुरुपुष्पिगुदिनामसमाधि॥ तत्तुक्तम॥ वाध्वगवावा नामसमा
धि॥ यत्तुसमाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिना सफवो ध्वं उमनिपुनिलरंगत वाध्वगवा नामसमाधि॥
तत्तुक्तम॥ जननपुनिरासानामसमाधि॥ यत्तुसमाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिना जननकदधाना
पलत्पतनायत्तु॥ जननपुनिरासानामसमाधि॥ तत्तुक्तम॥ जसमसमानामसमाधि ४
यत्तुसमाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिना जसमसमानामतापुनिलरंगतनायत्तु जसमसमानामस
माधि॥ तत्तुक्तम॥ सर्वधर्मातिक्रमनामसमाधि॥ यत्तुसमाधौ स्थित्वा सर्वधर्मातिक्रम
नितनायत्तुसर्वधर्मातिक्रमनामसमाधि॥ तत्तुक्तम॥ पञ्चिकदकनामसमाधि॥ यत्तुस

७३
८६

माक्षे स्थित्वा सर्वसमाधिना सर्वधर्माणां पञ्चिद्वयकत्रिष्यति न नाच्यत पञ्चिद्वयकनामसमाधिः ॥ ४ ॥
तत्कृतम् ॥ विमतिविद्वज्जनामसमाधिः यत्समाक्षे स्थित्वा सर्वसमाधिना विद्वज्जनामसमाधिः ॥
नाच्यत निजचिदानामसमाधिः ॥ तत्कृतम् ॥ ५ ॥ कथं ह नामसमाधिः यत्समाक्षे स्थित्वा न क
स्य विद्वत्स्य दयता समन्वयं गतिनाच्यत ॥ ५ ॥ कथं ह नामसमाधिः यत्समाक्षे स्थित्वा न कस्य
विद्वत्स्य दयता समन्वयं गतिनाच्यत ॥ ५ ॥ कथं ह नामसमाधिः ॥ तत्कृतम् ॥ ६ ॥ जाका जा रिति
ह या नामसमाधिः ॥ यत्समाक्षे स्थित्वा सर्वसमाधिना सर्वधर्मानां जाका जा रिति निर्हास समन्वय
गतिनाच्यत जाका जा रिति ह या नामसमाधिः ॥ तत्कृतम् ॥ ७ ॥ जाका जय ह नामसमाधिः ॥ यत्स
माक्षे स्थित्वा सर्वसमाधिना जाका जा रिति समन्वयं गतिनाच्यत ७ ॥ जाका जय ह नामसमाधिः ॥ ४

मः पु
सु जि
८७

गुरुकर्म॥ ब्रह्मज्ञानवद्वैता नाम समाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वधर्मानां नश्यत्तु समनृप पञ्चति ४
तन्नाम्यत ब्रह्मज्ञानवद्वैता नाम समाधिः॥ गुरुकर्म॥ निवृत्तिश्चैकसर्वलवतना चिकित्सा नाम समा
धिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधीनां निवृत्तिश्चैकज्ञानसमनृपा प्राप्तिर्यस्यानृपा पिता न कश्चिन्नपुति
विश्वतन्नाम्यतः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां संकतं नृप प्रवृत्तं नाम समाधिः॥ गुरुकर्म॥
गीर्वाणाकृत विमूर्क नाम समाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधीनां न कृत विमूर्कनां समव
पञ्चति॥ तन्नाम्यत गीर्वाणाकृत विमूर्क नाम समाधिः॥ गुरुकर्म॥ कलनात्मना नाम समाधिः यत्तु
समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधीनां गुरुसावरा सयति न पति विना च तन्नाम्यत कलनात्मना नाम समाधिः॥
गुरुकर्म॥ लक्ष्मणपतिना नाम समाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वलक्ष्मणपतिना नाम समाधिः॥

गुरु
८७

तितनायतलकलपत्रिभधनीनामसमाधि॥ ननु कर्म॥ ननु हिलुकिनामसमाधि॥ ननु क
र्म॥ सर्वाकालवलापनामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां सर्वाकाजवयापताएव
तितनायतसर्वाकाजवलापनामसमाधि॥ ननु कर्म॥ सर्वसुखइ ४ एव निजहिनन्दिनाम
समाधिः यत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां सर्वसुखइ ४ एव निजसमन्पञ्चतितनायत॥ सर्वसु
खइ ४ एव निजहिनन्दिनामसमाधि॥ ननु कर्म॥ नृकयाकायनामसमाधि॥ यत्समाधौ स्थि
त्वा सर्वसमाधिनां कयन्नसमन्पञ्चतितनायत नृकयाकायनामसमाधि॥ ननु कर्म॥ अज
लीपतिपर्तिनामसमाधिः यत्समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनां अजयति तनायत अजलीपतिः

मः ७
संज्ञि
८८

परि नामसमाधिः ॥ **तत्कृतम्** ॥ सर्वसंम्यक् मिथ्या त्वसंग हानामसमाधिः यत्तु समाक्षेप्तित्वा सर्व
समाधानां संम्यक् मिथ्या त्वानि समन्वयति तन्नामसर्वसंम्यक् मिथ्या त्वसंग हानामसमाधिः ॥
तत्कृतम् ॥ सर्वजाधनि जाधपु समन्नामसमाधिः ॥ यत्तु समाक्षेप्तित्वा सर्वसमाधानां जाधन
जाधन समन्वयति तन्नामसर्वजाधनि जाधपु वेष्टानामसमाधिः ॥ **तत्कृतम्** ॥ जृन्सा
जपु तिसा आनामसमाधिः ॥ यत्तु समाक्षेप्तित्वा सर्वसमाधिः ॥ यत्तु समाक्षेप्तित्वा सर्वसमाधिर्ना
जृन्सात्रात्र समन्वयति तन्नाम जृन्सात्रपु तिसा आनामसमाधिः ॥ **तत्कृतम्** ॥ विमल
पुल्ल नामसमाधिः ॥ यत्तु समाक्षेप्तित्वा सर्वसमाधिर्नापुल्लक्या नाम मण्डलानां पल्लवतन्नामसमाधिः
तन् विमलपुल्ल नामसमाधिः ॥ **तत्कृतम्** ॥ साववति नामसमाधिः ॥ यत्तु समाक्षेप्तित्वा समाधिः

७३
८८

नाममात्रनामपल्लवगतनामव्युत्पत्तिनामसमाधि ॥ गुरुकृतम् ॥ पप्रिपूर्ववन्दविमलानाम
समाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा तस्य समाधयाः पप्रिपूर्ववन्दविमलानामसमा
धयः ॥ पप्रिपूर्ववन्दविमलानामसमाधि ॥ गुरुकृतम् ॥ महाव्यहानामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा स
र्वसमाधिनाम महाव्यहानामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधि ॥ गुरुकृतम् ॥ सर्वा
काजपुत्रकाजनामसमाधि ॥ यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधि ॥ गुरुकृतम् ॥ समाधिसमाधिनामसमाधिः यत्तु समाधौ स्थि
त्वा सर्वसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधिनामसमाधि ॥ गुरुक
ृतमात्रनामसमाधिः यत्तु समाधौ स्थित्वा सर्वसमाधयान्नजनकीर्तनाय नमः ॥

मः ७
मः ७
८६

[illegible]

समृद्धा नाग राजा ॥ सागना नाग राजा ॥ मकुना नाग राजा ॥ मयाना नाग राजा ॥ सुदधना नाग राजा ॥ नृवना
नाग राजा ॥ वज्रना नाग राजा ॥ रत्नना नाग राजा ॥ पादुकी नाग राजा ॥ सारंगना नाग राजा ॥ श्रीमाना
नाग राजा ॥ श्रीकृष्ण नाग राजा ॥ श्रीवृद्धना नाग राजा ॥ श्रीवृद्धना नाग राजा ॥ श्रीरुद्रना नाग राजा ॥ नृवना
नाग राजा ॥ नृतिवली नाग राजा ॥ नवना नाग राजा ॥ मयना नाग राजा ॥ सुवर्धना नाग राजा ॥ नृवना
नाग राजा ॥ सुमयना नाग राजा ॥ सुवर्धना नाग राजा ॥ वृद्धना नाग राजा ॥ सुवर्धना नाग राजा ॥
मयना नाग राजा ॥ गङ्गा नाग राजा ॥ नृवना नाग राजा ॥ विद्याना नाग राजा ॥ सुवर्धना नाग राजा ॥
नाग राजा ॥ वर्षना नाग राजा ॥ विमना नाग राजा ॥ नृवना नाग राजा ॥ वलिना नाग राजा ॥ नृवना
नाग राजा ॥ गयवर्धना नाग राजा ॥ नृवना नाग राजा ॥ सुवर्धना नाग राजा ॥ नृवना नाग राजा ॥

म. पु.
सं. जि.
९०

आद वलिका नाग जाजा ॥ द र्भ नाग जाजा ॥ गर्ज नाग जाजा ॥ विगा का नाग जाजा ॥ विगु स नाग जाजा ॥
मृचि नाग जाजा ॥ मृचिलिंदा नाग जाजा ॥ महामृचि लिंदा नाग जाजा ॥ जाव नाग जाजा ॥ जाव
नाग जाजा ॥ रुचि नाग जाजा ॥ गिचि नाग जाजा ॥ मिचि नाग जाजा ॥ गिचि नाग जाजा ॥ लं मृका नाग जाजा ॥
किमिका नाग जाजा ॥ नृनका नाग जाजा ॥ कनका नाग जाजा ॥ मंरवा नाग जाजा ॥ मंरव पा ला नाग जाजा ॥ महा कृ
ष्ण नाग जाजा ॥ नंदी नाग जाजा ॥ उप नंदी नाग जाजा ॥ वासुकि नाग जाजा ॥ नकु का नाग जाजा ॥ कर्कटिका नाग
जाजा ॥ पुष्पा नाग जाजा ॥ महा पुष्पा नाग जाजा ॥ कूलिका नाग जाजा ॥ रुद्रिका नाग जाजा ॥ पिं ग ला नाग जाजा ॥
उल पुष्पा नाग जाजा ॥ श्रप ला ला नाग जाजा ॥ काला नाग जाजा ॥ उप काला नाग जाजा ॥ बलद वा नाग जाजा ॥ नाम
य ला नाग जाजा ॥ कमला स्वत जे नाग जाजा ॥ कमला नाग जाजा ॥ री मा नाग जाजा ॥ विरी मा नाग जाजा ॥ जा

गृ.
९०

कसा नाग नाजा ॥ लेलवाहु नाग नाजा ॥ गंग नाग नाजा ॥ सिंधु नाग नाजा ॥ चहु नाग नाजा ॥ भीता नाग नाजा ॥ मंगल नाग नाजा ॥ जनवत की नाग नाजा ॥ स्रुति विता नाग नाजा ॥ लेला वल नाग नाजा ॥ धन नाग नाजा ॥ धुति धन नाग नाजा ॥ निमि धन नाग नाजा ॥ रुडा नाग नाजा ॥ सुरडा नाग नाजा ॥ वसुरडा नाग नाजा ॥ वलरुडा नाग नाजा ॥ मलि नाग नाजा ॥ मलि रुडा नाग नाजा ॥ मलि नाग नाजा ॥ नकु मलि नाग नाजा ॥ वल नाग नाजा ॥ रुडा नाग नाजा ॥ सुरडा नाग नाजा ॥ इइहि नाग नाजा ॥ उपदुइहि नाग नाजा ॥ मसुती नाग नाजा ॥ मलिसुता नाग नाजा ॥ धरु नाग नाजा ॥ विरु रुका नाग नाजा ॥ विरु पाका नाग नाजा ॥ वैशु वल नाग नाजा ॥ सकठ मरुता नाग नाजा ॥ वापयकी नाग नाजा ॥ रुमेरु मा नाग नाजा ॥ पांचाला नाग नाजा ॥ पंचवदा नाग नाजा ॥ पुशु म्ना नाग नाजा ॥

मः पु
नमि
८१

विद्युत्संरुवा नाग जाजा ॥ श्रवणसंरुवा नाग जाजा ॥ महामद्यविकुर्विता नाग जाजा ॥ महामद्यवि
कुर्यिता नाग जाजा ॥ महामद्यसंरुवा नाग जाजा ॥ मद्यगर्जिता नाग जाजा ॥ वर्षसंरुवा नाग जाजा ॥
उल्कापाता नाग जाजा ॥ श्रवणालगर्जिता नाग जाजा ॥ गजसंरुवा नाग जाजा ॥ महामद्य २ पुश नाग
जाजा ॥ शीतजा नाग जाजा ॥ शीधना नाग जाजा ॥ महामद्य २ ४ दाना नाग जाजा ॥ किलि २ ४ दाना नाग
जाजा ॥ महावालविकुर्विता नाग जाजा ॥ वातपुमावना नाग जाजा ॥ मद्यसंरुवा नाग जाजा ॥ ४
शीधना नाग जाजा ॥ मद्यनन्दिता नाग जाजा ॥ मद्यसंरुवा नाग जाजा ॥ मद्यमंलुलसंरुवा नाग
जाजा ॥ श्रवणजित नाग जाजा ॥ मद्ययना नाग जाजा ॥ वातसंरुवा नाग जाजा ॥ वातकाणा
नाग जाजा ॥ मलिरुजा नाग जाजा ॥ सुशीर्षा नाग जाजा ॥ श्रवणसर्विता नाग जाजा ॥ कालेन

गु
८१

[illegible]

मः पु
सं जि
८२

गता गु तु गु जय मा ॐ मा हा वा न पु य य न्क ॥ म हा ना द व द का न म नी या न ध र्म ना द का म हा ना गु न्ग री
त्र व वि वि त्रा का ज ल र ग व न्क म रि का द य न्क ॥ पु द कि नी क र्ब कि स्म ॥ पु द कि नी क र्ब का न त स्म ॥ ७
का न्क सि गा ॥ पु लि न्क ना नी क र्ब कि स्म ॥ सर्व लोक धा तु स म् पु ष् प पि यी या फे जा वा य् च ज मा लु न्क ॥
सर्व ज्वा य रा स स म य प ज मा न् ज उ स ॥ उ के क सि न्क न्क ज मा न् ज उ सि ॥ सर्व ग ल स म् पु स म ति
जा गो न्क स र्वा या पु म या वि न्का न रि ला य स म ति जा न्क का य स र्वा स म् पु दे ॥ उ के सि न्क स ज्वा प म
या स र्वा या रु लि स म् पु भ द्या न पि ष्ठा य स म न्क दि क ता रि म्वा द के क स्मा त्प ज मा न् ज उ रा ग
स म ना दि कू ल रु ल ले ॥ ज स रि न्क ॥ सर्व प्वा म्वा स म् पु दे ॥ सर्व वृ द्ध वा पि स त्व स म् पु दा स र्क य
भा गु न्क क या मा मा न य म प्ज य म ॥ य इ ता पु र्वा या स र्वा या वि न्का न्क यु र्वा मा र्वा प वि ना न रि ला य

७२
८२

न संति न ॥ सम कव र्णा उरा व समुद्र मध्येः संक न गगन न क न म विद्या य य था वा वि स त्यात्म राय
 समुद्र मध्येः ॥ सर्व सर्व जल व र्ज न निधन सर्व स र्व व न्नात्म राय म लु ल समुद्र मध्येः सर्व जल
 लाल कू सु म समुद्र मध्ये ॥ सर्व जला य स सकु ठ ग म न समुद्र मध्ये ॥ सर्व र्ज व का का न समुद्र
 मध्ये ॥ सर्व गंध धूप सर्व ज प द र्जन समुद्र मध्ये ॥ सर्व जला हा य कू सु म समुद्र मध्ये ॥ सर्व जला व ल
 सकु ठ ग म न समुद्र मध्ये ॥ सर्व र्ज व का का न समुद्र मध्ये ॥ सर्व गंध धूप सर्व ज प द र्जन समुद्र म
 ध्ये ॥ सर्व ज न निग र्जि न वा य समुद्र मध्ये ॥ सर्व गंध व क समुद्र मध्ये ॥ संक न गगन न ग न म विद्या
 य समुद्र मध्ये ॥ ॥ ॐ वरुण मये नमः ॥ वरुण मया संस्था या तु त्या प त्रि मा ल ॥ त्रि मा ल ॥ त्रि मा ल ॥ त्रि मा ल ॥
 प्ये न सं ति नैः सर्व पूजा मध्येः समुद्र मध्येः सर्व व द्वा वि स त्या समुद्रा त्वा त्क र्मा भा ग उ र्क र्मा मा मान य म ॥

पु
२३

पूजयामः सर्वव्याह विषय विद्यानिगर्हमलिजाऊ समुद्रमये॥ सकृन्नगगनंक्रम विद्यायसर्वव
द्वाधिसत्व समुद्रात्सत्कृयाभामानयामः पूजयामः सर्वव्याह विषय विद्यानिगर्हमलिजाऊ समु
द्रमये॥ सकृन्नगगनंक्रम विद्यायसर्वव्याह विषय विद्यानिगर्हमलिजाऊ समुद्रात्सत्कृयाभामानयामः
पूजयामः सर्वसमकावरासत्त्ववर्षव्याहमलिजाऊ समुद्रमये॥ सर्वत्रलानिकालेन निर्यामलि
धाषमनिजाऊ समुद्रमये॥ समकात्ताजलसर्वव्याह धर्मनिद्याषमनिजाऊ समुद्रमये॥ समकम्
त्तजलत्रमिवद्दुर्निर्मलवत्सत्समुद्रमये॥ अविद्युद्वद्दुर्गतागत विमानपुगिरासत्तद्वर्गनम
लिजाऊ समुद्रमये॥ जलविचित्रजलपत्रत्तद्वद्दुर्गायपुगिरासत्तद्वर्गनमलिजाऊ समुद्रम
ये॥ सकृन्नगगनंक्रम विद्यायसर्वव्याह विषय विद्यानिगर्हमलिजाऊ समुद्रात्सत्कृयाभामानयामः पू

गु
२३

जयाम ॥ जसुरिज ॥ सर्वत्रलगविचित्रपुष्पकूठाग्निसमूहमध्येः सर्वस्काहात्रविचित्रकूठाग्न
 त्समूहमध्ये ॥ सर्वपुष्पकूठाग्निसमूहमध्ये ॥ जसुरिजसमूहमध्ये ॥ सर्वपुष्पकूठाग्निसमूहमध्ये ॥
 सकृन्नगगनकनमधिषायसमूहमध्ये ॥ दमदिगसूत्रलमध्ये ॥ समनकनमिष्टाग्निसमूह
 मध्ये ॥ समसत्त्वत्रलकूठाग्निसमूहमध्ये ॥ सर्वत्रलत्रपुत्रिमिलिविज्ञानकथरुभयासनक
 गाग्निसमूहमध्ये ॥ सर्वत्रपुत्रिमिलिसमनकनमिष्टाग्निसमूहमध्ये ॥ सम
 नकनमधिषायसमूहमध्ये ॥ सकृन्नगगनकनमधिषायसर्ववृद्धवा
 नसत्त्वसमूहमध्ये ॥ समसत्त्वत्रलकूठाग्निसमूहमध्ये ॥ जसुरिजसमूहमध्ये ॥ सर्वपुष्पकूठाग्निसमूहमध्ये ॥
 समनकनमिष्टाग्निसमूहमध्ये ॥ समसत्त्वत्रलकूठाग्निसमूहमध्ये ॥ सकृन्नगगनकनमधिषायसमूहमध्ये ॥

मं/पु
सं/गि
८४

धंजमलित्रलपर्शगरसिंहासनसमूहमध्ये॥ त्रलपमिमल्लिगपुर्षविचित्रगरसिंहासनसमूहमध्ये॥ ॐ न नीलमृचित्रकालत्रसिंपर्शगरसिंहासनसमूहमध्ये॥ अकयत्रभिमिकालात्रपर्शगरसिंहासनगरसमूहमध्ये॥ त्रवत्रलकालात्रितुगपर्शगरसिंहासनसमूहमध्ये॥ वृद्धजुगनिर्घात्रसिंपर्शगरसिंहासनसमूहमध्ये॥ अस्तिन्नसंक्रान्तगगनंक्रत्रमधि-
कायसर्ववृद्धवाधिसत्वसमूहात्सत्कृष्णमागुज्ज्वलायामामानयामः पूजयामः॥ सर्वगीर्ध्रम-
लिविविरुवृक्षसमूहमध्ये॥ समकमृत्वपुगांजलिमद्यनिःमत्रलग्नवृक्षः समूहमध्ये॥
सर्ववृहतीः सुतानंतकाजवृक्षसमूहमध्ये॥ सवृक्षत्रपात्रेकवृहत्सदमनवृक्षसमूहमध्ये॥

७३
८४

सर्वकृतसममद्यपुनित्तचवद्वसमूढमध्ये॥ सर्ववद्वज्रपात्रेकव्यहसदभिनवद्वसमूढमध्ये॥
सर्वकृतसममद्यपुनित्तचवद्वसमूढमध्ये॥ सर्वजलाविमलुलविद्यातिगवद्वसमूढमध्ये॥
सर्वचन्दनवर्लकाधिसत्त्वार्ककायसदभिनवद्वसमूढमध्ये॥ सर्वत्रुतनीद्याषनिगतिम
नाह्निनिधाषसमकपुम्वनवद्वसमूढमध्ये॥ सर्ववाधिसत्त्वामलुलविविष्टव्यहप्रसावद्व
दयतानकः सर्वजलवस्तुका॥ सव्यविद्याठिवद्वसमूढमध्ये॥ जनंगवर्लजलपमर्गरसिं
हासनसमूढमध्ये॥ समकानिमखमनिगाडविद्यातिगरसिंहासनसमूढमध्ये॥ सर्वलकाल
व्यहप्रतिमलुतगरसिंहासनसमूढमध्ये॥ विविष्टजलाविःप्रदीपमालागरसिंहासनसमूढमध्ये॥

मः ७
सु ७
८५

समस्त विद्याषु जलानि सजलगरं सिंहसनसमूहमध्ये ॥ सर्वगंधकसमपर्वहाज जलगरं सिंह
सनसमूहमध्ये ॥ सर्ववृद्धासनवृहसंयजनमलिजाजगरं सिंहसनसमूहमध्ये ॥ जलवृहहा
लपुलं विगाजल वल्लि कापुमिमं लिगजलगरं सिंहसनसमूहमध्ये ॥ सर्वद्वममं लिगजलगा
वर्क का ॥ सिंहसनसमूहमध्ये ॥ विद्युगंधजलकिं किनीजासमंगालकालसर्वा विद्यागित
गरं सिंहसनसमूहमध्ये ॥ सकृन्नगगनक जम विद्याय सर्ववृद्धा वि सत्वसमूहसत्कृष्ण
मागुगृकृष्णामाजयामः पूजयामः सर्वविद्यामर्निजाज विगानसमूहमध्ये ॥ हुं हुं नीलमनिज
लकं गजसर्वपूषा वृह विद्यामनि समूहमध्ये ॥ सर्वगंधमर्नि विगानसमूहमध्ये ॥ जलार्थिपुदीप

गुरु
८५

विग्रह विमान समूह मध्ये ॥ सर्ववृद्ध विनिद भनपुला मंलुल निघाष मलिजाज समूह मध्ये ॥ विवि
उमलि वस्तु सर्ववृद्ध पुला ससंदभन विमान समूह मध्ये ॥ सर्वपुष्पाद्यका लावला सजल विमान
समूह मध्ये ॥ विविगुघंभा समक निघाष वस्तु जलका ला विमान समूह मध्ये ॥ जनंन वल्क पर्वजाल
विविगुमलिकरुठि काय पर्वजाल विमान समूह मध्ये ॥ सर्ववृद्ध कभज सिंध्या निघंउ विमान स
मूह मध्ये ॥ नृविग्रह पुला ससर्ववृद्ध सिंहासन समूह मध्ये ॥ संकंनगगनंनज मधिका
मसर्ववृद्ध वाधि सत्व कर्जुला मृत्तानीघाष मलिजाज कुरु समूह मध्ये ॥ विविगुत्रला विमाला
कुरु समूह मध्ये ॥ समंन जलपुला समलिगुघंभा जाल वलं विगु विविगु पुष्पाद्य पर्वकुरु समूह मध्ये ॥

मं
चं
८६

वन्यमवर्णका मसमनरुजलकुरु समुद्रमध्ये॥ विविर्क विप्लवद्विषयिधामितसमनावरु
रुजलकुरु समुद्रमध्ये॥ असिनेः सर्वद्ववाधिसत्व समुद्रात्सत्क्या मागुत्र मामानयामः पूजया
म॥ सर्वजलावरा समंलुल समुद्रमध्ये॥ असिनेः सर्वजलाविर्कयुहपुला मंलुल समुद्रम
ध्ये॥ सर्वकूसमभयविधामितपुला मंलुल समुद्रमध्ये॥ सर्वजलजम्बिद्व निमालपुला
मंलुल समुद्रमध्ये॥ सर्ववर्धकुरुपुला मंलुल समुद्रमध्ये॥ समनमुखव
द्व विषयनिगर्जनजल मयापुला मंलुल समुद्रमध्ये॥ सर्वकूपमल्लगुमलिजाज
जम्बिपुला मंलुल समुद्रमध्ये॥ अननसत्वत्रपविर्कलकलसंदर्शनपुला मंलुल समुद्रमध्ये॥

गु
८६

सर्वपर्वममं लुलसमूहमधे ॥
सर्ववृद्धप्रतिभनसंरुवमनाह निनादनपुमं वनपुलामं लुलसमूहमधे ॥ सर्वपर्वमं लुलसमूह
विनयनिद्याममलिजउपुलामं लसमूहमधे ॥ सर्ववृद्धवाधिसत्वसमूहातसत्कृयां मागुजृकृयां मां मा
पायः पूजयामः ॥ नृसंरिनेः सर्वमलिकाभजन्मीसमूहमधे ॥ सर्वत्रपगवर्गभजसपवयः
नसमिंसमूहमधे ॥ सर्वत्रलार्चिसमूहमधे ॥ सर्ववृद्धमलिगर्जनसूत्रलजन्मीसमूहम
धे ॥ सर्ववृद्धकुरुवृहविद्यातिगजन्मिसमूहमधे ॥ सर्वपूष्यकृष्णगजजन्मिसमूहमधे ॥
सर्वत्रलप्रनृन्मिसमूहमधे ॥ सर्वकल्पपञ्चपञ्चावृद्धसमूहसत्यपत्रिपाकननिगर्जन
जन्मिसमूहमधे ॥ नृकयसत्यजलानिदभनसर्वपूष्यकभजन्मिसमूहमधे ॥ सर्वसन्नय

मः पु
सं जि
९७

रु संद जन ज जि स म्दु मध्ये ॥ रु सं रि न क न क व र्ण चित्र त्वा वि स म्दु मध्ये ॥ स म रु पु रा म नि ग
जा वि स म्दु मध्ये ॥ वि प ल स र्व वृ द्ध क तु य ह वि श्रानि न ना विः स म्दु मध्ये ॥ स र्व गं अ विः स म्
दु मध्ये ॥ स र्व वृ ह वि स म्दु मध्ये ॥ स र्व वृ द्ध नि र्मा ला र्चि स म्दु मध्ये ॥ वि चि र्ज ल द्म क म ज
वि ना म स म्दु मध्ये ॥ स र्व व र्ण वि स म्दु मध्ये ॥ रु न रु वा वि स त्व व र्ण नि र्घा ष म नि ग जा र्चि स म्
दु मध्ये ॥ स र्व म नि म का पु डी पा र्चि स म्दु मध्ये ॥ रु स रि न्ने स र्व वृ द्ध वा वि स त्व स प न म घ स म्
दु मध्ये ॥ स म्दु ता स त्क र्मा भा गु र्क र्मा भाः मा न य मः प ज या म ॥ रु वि न्ने स र्व गं अ प ण वि चि त्
स म्दु मध्ये ॥ स र्व ज ल र्चि पु र्म आ ल स म्दु मध्ये ॥ रु न रु व र्ण म नि न ल पु रा मं ल स म्दु म
ध्ये ॥ स र्व ज ल व र्ण म का का ग स म्दु मध्ये ॥ स र्व ज ल गं अ व न व र्ण स म्दु मध्ये ॥ स र्व ज ल क रु स

७७
९७

मउ मध्ये॥ मनाहं गुरुत्प सल्लं क म ज मि धा ति चं ज वि ता न स मू ड म धे॥ न वि द्य य ह पु ति रा स
य हा लं का ज स मू ड म धे॥ मनाहं गुरुत्प वि ज नि धा ष म रि ज जा स मू ड म धे॥ स र्व धा ति म नि व
ऊ हा ज स मू ड म धे॥ ज न नु ज ल का म स मू ड म धे॥ स र्व स मं न ए डा ल रा व स मू ड म धे॥ स र्व व
द धा वि स त्व सा ग ल म ध स मू डा त्स कू र्वा मा उ त्स कू र्वा मा मा न य मः पू ज य म॥ उ वं ज प पु लि ध
न कू र्वा ग ना ग जा जा न॥ पु न र ग वं तं ति पु द की ली कृ त्वा पा दा व रि वं द नं कृ त्वा र ग व ना नू हा नाः
स्मृ त्स कू स न ष य षी द न॥ ॥ गे न य ज पु नः स म य न सा न न प वि क न म य ह त जा मं नु ल
पृ धा षा पु ति क्वा ष य न र ग वां स्मि नां ज ली प्र ल म्प र ग वं क म गु दं वा च गु॥ ए क य र ग व कं त भा ग
न म र्ह त स म्प क्कू दं कि वि द व पु द गं र ग वं नू य न म र ग वा ना का म कू र्वा त्प दः पु न य क न ल य॥

मः पु
संति
८८

उवं मूक एग वा ना ह क नं ग पत्रि क ज म य य ह न काम लुल क ग का ज वा ज ना ग म धि प मि म त द वा च
न ॥ ए क त्वं तु जं ग म धि प मि य द वा का क स न सै व पु ग वा क ज ल न चि रू मा ना ध यि ष्य ॥ उवं मूक जे न
ने पत्रि क ज सा ग ज म य य ह न काम लुल ना ज सि सा ह स म हा सा ह सि काम हा ना ग म धि प मि र
ग वं न मं द वा च न ॥ क पं र ग व न स र्व ना ग म नां स र्व ना ग इ ४ र्णा नि पु मि पु त्र यः पु रु षि ताः सु ख स
म नि वे ता ए ह जं वृ षी प का ल न का लं व र्ष च ज उ त्स जं य ॥ स र्व त् ल गु ल्मो ष धि व न स्य मि वि ना ह
य य ॥ स र्व न ए न्य त्या द य य ॥ य न जं म द्वि प का म न् व्या सु ख सै म पी ता रु वे य ॥ उवं मूक एग
वा न् न नं क पत्रि क ज सा ग ज म य य ह न काम लुल क ग का ज वा ज ना ज सि सा ह स म हा सा ह सि क म हा
ना ग म धि प मि म त द वा च न ॥ वा व न सा ध सा ध त् जं ग म धि प न य सां स र्व स त्या ना हि त सु र वा य पु मि पु

७२
८८

ब्रह्मगणनमनमर्थपत्रिपुष्टयंमन्यत॥ गनहिमहासूक्तंमधिपतिगन्तुसाधवसूक्तवमनसि
कृत्स्नगणन॥ अथैवमनमहासूक्तंमधिपतिगन्तुसाधवसूक्तवमनसिंकृत्स्नगणनसि॥ अथ
मनसमनागतानां सर्वनामनां सर्वइष्टानिपुलवेयः सर्वसूक्तसमर्पिताश्चरवेय॥ कनमने
कथमनियइतमेतागतसूक्तंमधिपतिमेतिविहात्रीलुदवमनूष्णाग्निनानदकृन्मसिलनक
नकउदकननाह्यविषमनहन्य॥ पत्रवकुलनाहिलुयंकसूक्तसपकीसूक्तवपुतिवधन॥
सपत्यपत्रिपुष्टनाश्चरवन्ति॥ महापत्यनजाकिताः अनवमर्दचित्रियाश्चरवन्ति॥ सदवकनला
कनग्रासादिकाश्चरवन्ति॥ प्रियदर्भनाश्च सर्वगुपतिहृत्गतगतयश्चरवन्ति॥ सर्वइष्टः स्वपुतिपस
वासंपुहर्षिताश्चरवन्ति॥ सर्वसूक्तसमर्पिताउक्तमनूष्णाधमपुतिविषकायस्यरदावृक्ष

मः ७
पुत्र
८८

लो कउ पप यम् ॥ ७ न ७ उ ७ ग ७ धि प मि सं सा ज मे शि वि हा जी ७ ल द व म न ७ ध्या नां ॥ त म्मा न् ह ७ हि ७ उ ७ ग ७ धि प
मि मे शि य का य क म ल मे ग ७ ष वा र्क म ल मे ग ७ ल म न ल म् ल वि ह र्क ७ ॥ पु न न प ल र ७ उ ७ ग ७ धि प मि ॥
स र्व स र्व द दाना म धा त्र ना पु र्क यि त वा ॥ सा स र्व ना ग नो स र्व ना ग इ ७ र ७ नि पु मि पु सं र व मि ॥ स र्व स र्व
वि च द दानि ॥ य न ह ७ उ ७ व ७ धी प का य न काल व र्क धा जा उ ल ७ उ ७ मि स र्व ल ७ गु ल्मौ च धि व न स्य मि ॥
स्या नि च वि आ ह य मि ॥ त नु र ७ उ ७ ग ७ धि प मि क त मा ॥ सा स र्व स र्व द दाना म धा त्र जी ॥ त य धा ॥ ५ न
ली धा त्र ली उ र्क ७ ली स पु मि स्थि ता वि उ य व र्क स र्व पु मि ह ॥ सा स र्व न व मि उ त्या द नी वि ना ॥
नि क रि वि च नि क रि का ह त्र गु र ७ य मि क उ ता म र्क वा त्र नि वा जा ह त्र कृ ण न ध न पा य ल ध
य मा र्ग नि जी ह क ध म् ता म् पा दान मि मि ॥ पु न न प ल र ७ उ ७ ग ७ धि प मि य व ल स र वा धि क्ता न य

गु ७
८८

हमजागर्हनिर्वा नावरा संज्ञा नह्यत्वं वृद्धागामं लुप्तगो कजग का लुवप्रा च न क वा ला उ का हि गि वि
जाजा नयं गुगुनां न धागता न मध्य या नि धात्र यि न धा नि म न सि क र्त्तु व्या नि सर्व नाग कू लानां सर्व
नाग गुगुनां सर्व नाग इ ४ द्वा नि पु र वं ति सर्व सु र प धा ना न्य प सं ह्य ति ॥ ग गु रं जं ग धि प मि क त
मा नि ता नि सर्व नाग नां सर्व ना गी नां सर्व नाग इ ४ द्वा नि पु रि पु स्र आ नि सर्व सु र स म पि ता न्वा का ल न
का लं गु रु र्त्तं वृ द्धि प व ष षा जा उ त्स र्ज न ॥ सर्व गु ल गु र्त्तो ष धी व न स्य मि सु र्वा नि च वि जा ह र्य ति ॥ ॥
ॐ ध र व त्वा न न पात्र मि त यं य त्रि क तः सा ग त मं य य र्ह न आ मं गु ल क गु का ज जा उ गि सा ह स म हा सा
ह स का ना ग धि प मि र ग वं न म ध्य रा ष गे स ॥ ॥ सा ष तु र ग वां स्मा द्धु नि ना म ना धा त्र जी मं नु प
दा नि गु रु र्त्तं वृ द्धि प प णि म का ल प णि म स म य र्ज ना व द्यो उ दा त्रि ते म हा व र्ष षा जा पु व र्ष य य ४

मः ७
संज्ञि
१००

का
कारलकातसमय धर्मिकाजनपदकलिकलहसमय ॐ मूपदवकातसमय जागमत्रलका
तसमयविषमनकुरुसंस्थानकातसमयसर्वमूपदवापीडाप्रमनंकुर्यावकाचिद्वानाधि
ष्टुलुगवानजमकात्रलिकः सर्वसत्त्वान्कुरुकगध्यात्रपाणिनामध्यात्रनीमनुप्रदानागविनामास
र्वनागानां वादयन् ॥ अतिसंस्थानंकुर्य ॥ विषमनकुरुकुरुगंप्रसमयय ॥ सर्वदिवा न्यहृषयि
य ॥ सर्वमात्रात्रिविधं सयय ॥ सर्वसत्त्वानां चतुर्कथय ॥ सर्वरथाप्रदवापाया न्वनिवाजयय ॥
पंचवर्षाकुर्यान्निहृगवगाकात्रिसर्वानि विष्कुरुवय ॥ सम्यग्वर्षध्यात्रा ॐ हं वद्विपुतस
जयत्रिजि ॥ अहंरुगवन्सर्वमध्यागताष्टीषयामी ॥ उवंमुरुकरुगवानानकपत्रिकयसागलम
पयहृगजमउलकाकात्रजाजनागधियगासमदवावग ॥ साधसाधमहारजंगधियगिय

७२
१००

तत् सर्वं भागं न मया प्रयासि सर्वं सत्त्वं नाम भयं हि ताय सखाय न हि महादुःखं म विपतिः ॥
साधु वसुधु व मनसि कुरु ल विष्णुति ॥ महादुःखं एव महा मय निनाद विष्णुतिः सुत्रं तु नाम
अत्र नि सर्वं दुःखं ल विष्णुति विष्णुति न मादि ता सर्वं सत्त्वं नाम भयं हि ताय सखाय न हि महादुःखं म विपतिः ॥
अति वृद्धि निवाज यंति ॥ मत्र न का लं पु मयंति ॥ सर्वं ना गं सं वा द यंति ॥ सव द वा पु द्वा द यंति ॥ सर्व
मा न वि धं स यंति ॥ सर्व सत्त्वं नां व सर्व सख सम पि ता क अति ॥ न य भां ॥ महा द्वा ना व रा सः ॥ गी त जाल
आ द न्द वि कु म व ड स ह न ना प त्र म वि त्र जा नि र्म ल गु ल क र्त्तु स र्ग्य पु र ल वि म लां ग य वि र न र स
ए न र इ इ व ह न र महा पु र वि ध न म ह मा हां व का य पु र ल मा य ॥ अ प वि प ॥ म वि वि ल म न र्क ॥
~~म वि वि ल म न र्क ॥ म वि वि ल म न र्क ॥ म वि वि ल म न र्क ॥~~ म वि वि ल म न र्क ॥ म वि वि ल म न र्क ॥ म वि वि ल म न र्क ॥

३:७
१०१

[illegible]

77
909

वषधं ॐ रुजं वृद्धाप सर्वत आगुरुं स साहा ॥ गठ २ ठि ठि र्ग म हा म नि म कूठ मो लि ध ला आ आ वि
ष ज पि नि स्म ज न ति ज त्वा वि द्या न व ज ध ज स ल न रु ज वृ द्दी पे सा हा ॥ क ज २ कि जि २ क ज २ म हा व क
वा सि न म हा रु कू ठा या ना रि या यि नः आ ग क म मे गु चि त्ता ॐ रु ज वृ द्दी पे व र्ष धा जा उ त्प ज नः सर्व त
आ ग न स ल न वि द्या न न व ज पा लि ना स्मा प यं ति ॥ ज ल २ जि ति २ ज ल २ वि क र सि द्वा र य तुं सर्व रु ज
गः सर्व त आ ग न स ल न य म २ पि मि २ य म २ सा हा ॥ आ बा रु या मि सर्व ना ग म मे गु चि त्ता न वा पि वि
रु प र्व ग म न ॥ ॐ न ज २ नि जि २ न ज २ सा हा ॥ वि ग ना ग नि कृ त स र्पा य क क म हा व त्ता ना म ना ग
ना बा रु या मी ॥ ल श म हा रु ज ग स्म ज न प ज म हा का र लि का नां सर्व पृ थ क्ति ना नां वि ग न रु ग
नां सर्व त आ ग नां ना ग वि द्या नं उं ग द २ जि दि २ उ ३ २ सा हा ॥ म हा ना ग ज प ति रु ग व ल प ज क म
ने जा ध जा व र्ष धा जाः पु व र्ष धा जा रु ज वृ द्दी पे सा हा ॥ ॐ स ज २ सि जि २ स ज २ सा हा ॥ ल श म

हानागः स्वकूलस्य समन्तवर्षा जातु र्दुर्जनं हुं हुं वृद्धीप सर्वदेव सखा धिस्थानेन
 मालविन साहा ॥ हुं कसखा धिस्थानेन प्रवर्षत हुं वृद्धीप साहा ॥ गुरु मन्त्र प्रवर्षत महानागः हुं
 हुं वृद्धीप साहा ॥ चतु मन्त्र जातु सत्य प्रवर्षत हुं वृद्धीप साहा ॥ अक्षमन्त्र सत्य प्रवर्षत म
 हानागः हुं वृद्धीप साहा ॥ वर्षत महानागः गगानं पन्न सत्य हुं वृद्धीप साहा ॥ वर्षत म हा
 नागः सकृदागमि सत्य हुं वृद्धीप साहा ॥ वर्षत महानागः अनागमि सत्य हुं वृद्धीप साहा ॥
 वर्षत महानागः न ह सत्य हुं वृद्धीप साहा ॥ वर्षत महानागः पुण्य वृद्ध सत्य हुं वृद्धीप सा
 हा ॥ वर्षत महानागः सर्ववृद्ध वाधित्व सत्य हुं वृद्धीप साहा ॥ वर्षत महानागः सर्वत आगत
 गाना सखा धिस्थाने हुं वृद्धीप साहा ॥ सर्वदेवानां सत्य न समयेन सखा पुण्यवान हुं वृद्धीप साहा ॥ ४

सर्वनाम नां सत्त्वं न पुत्रं वरं हजं व दीपं महापुत्रं पि व्यासा हा ॥ सर्वयक्रा नां सत्त्वं न जक्रं तु सर्वसत्त्वान्
सा हा ॥ सर्वनाम नां सत्त्वं न पुत्रं वरं हजं व दीपं सत्त्वं न सा हा ॥ सर्वगं वानां सत्त्वं नापहं जगत्सर्वपड
वा नि मन्त्रा नां सा हा ॥ सर्वा सत्त्वा नां सत्त्वं न वि यत्न यगः सर्वविषम न क्रुता लि सा हा ॥ सर्वगत्तदा
ना सत्त्वं न मे जी कृत्तः सर्वनाम नां यदी हजं व दीपं महावर्षं अजात सत्त्वं यः सा हा ॥ सर्वकिन्नना
नां सत्त्वं न समयं तु पापं पुत्रादयगः सर्वसत्त्वा नां व सा हा ॥ सर्वमहाजगत्सत्त्वं न वि यत्न किन्नवर्ष
अजात सत्त्वं न संवा जयगत्तं व वर्षा व जलानि सा हा ॥ सर्वमन्त्रा नां सत्त्वं न पवि पा लय न सर्वमन्
त्रा नां सा हा ॥ ॐ कृत्तं २ किन्नि २ कृत्तं २ सा हा ॥ दत्तं २ दिनी २ इत्तं २ सा हा ॥ नत्तं २ निनि २ नृत्तं २ सा
हा ॥ ॐ सत्त्वा नां सत्त्वं न वि यत्न किन्नवर्षं अजात सत्त्वं न संवा जयगत्तं व वर्षा व जलानि सा हा ॥ महाभया धा नि नम

मः ७
नं ११
१०३

यस्य स च का प्र मय मया काल मय गर्जन मया धिगम हा मय मो । लित्र मय माला ध प्र मय वि
रुषिग मय या न मय निव सिनी मय गर्ज मय ऊठ मय पत्रि वाय वि प्ल मय धि ग मय
यज्ञा पवीत स स्था प सं ह प्र गि जिं द न नि सि नि नाग मा हे र ग व मि म हा मय अ धा मित्र स गीत सं स
ग म हा गीत सं लु लि गु म य न म हा नाग वि क्रा ठि न म हा द वी र ग व ती पो उ व ठ सा ध य न धा ज न
पु व ष न वृ ष स न न ह ज म द्वा प सा हा ॥ य न र धि जि २ य न र धि जि नि २ य न र धि म न व ष म
हा मय मालि नि वि द्य क ला य मा जि नी सर्व रू उं ग म धा जि नी म हा मय पट व रू धा ज ली
स व वि षा गु र म व ल म हा मय य ह वा ही नी ना उ नि ना दि नी ग र ग व ती नां ग ग न सं वा द
य द वि म हा मय मा जि नी वि द्य काला क ला ल माली ली सर्व ग धा ग न स न सर्व ना ग म व

ग १
१०३

षममासं यनहं वृद्धिपसाह ॥ ॐ यत्र २ यिप्रिश्यत्र २ साह ॥ जल २ जिलि २ जल २ साह ॥
गत्र २ गिप्रि २ गुत्र २ साह ॥ ॐ गु २ गि २ गु २ साह ॥ ॐ मद्र २ मिद्रि २ मद्र २ साह ॥
हत्र २ हिप्रि २ हत्र २ साह ॥ मत्र २ मिप्रि २ मत्र २ साह ॥ ॐ तत्र २ तिप्रि २ तुत्र २ साह ॥ ॐ हन २
दह २ पच २ मध २ गृह २ मर्द २ पुमर्द २ सर्वषम विद्युमेययाहा पयितिसाह ॥ वृद्ध २ हन २
पापं सर्वसत्यानां च नामाधिष्ठाय पृथं संव्रजानामध्वजली चत्र २ गुरुमगगुलामुपापलमाहनात्क
गुरुधर्मसंश्रुपमिहामहामालम्बितलाकषट्ठरगयनी सर्ववृद्धमेजायापत्रयसर्ववृद्धकृगालिगु
द्रुणामाचत्रपाञ्चत्रवाहिनी ॥ ॐ ५ ५ २ ५ २ २ समगु ५ नपाप ५ नमानससर्ववर्षनिविद्याविद्य
हयसाह ॥ सर्वगु अंगसत्यनमेतु विप्रसम्पगुतगपनियमविंशतया महाभागजसंवादया

पः पु
सं जि
१०४

मिपु वषत पत्रि कन सा गत्र महा मद्य य ह न जी मं लु ल क गु का त्र जा उ म हा ना ग म वि प ति क स सा
या मि पु र्व ष त जं वृ ङी प सा हा ॥ ॥ १ वं पु म र्वेः स र्व ना ग ना जा सं वा द या मि पु र्व ष म हा ना
गु धा त्र म न स ना ग हृ द य ध मा कू ल उ गु ना ष ल पु च लु मं ज वि षा गु ङा भा वि ष ङ हि धा त्र
कृ षु पिं ग ले व च लं ल ल किं क म हा द लि क य काल पा ल जो ड वा सि नी इ इ म म हा धा ल धा
ल सि षि ला सा हा ॥ ॐ क न २ ग ल २ म हा ग ग त्र प त्र २ पि त्रि २ प त्र २ वि स्रु क्त न ७ त्र २ म हा
रा रा म नि ध त्र दि त्री २ हृ त्र २ द ल २ व र्ष ल ज लां वृ ङ य सं ष त्र २ व ना ह का न ४ ४ २ ७ त्र २
ग त म २ गु त म २ ध ध म २ ध ध म २ ध ध म २ ध ध म २ द द म २ इ इ म २ म द पु रं म हा म द वा हि नी
क ठ २ इ इ म २ च न २ सि सि २ क न २ ग ल २ म हा ग ल नि गा य प उ कि नी म हा ना हृ द य च न २

गु २
१०४

सुत्राय यः सादृशं तं अगमविदुः तया ज्ञापित्री विदुः त्रयि शं रयः आवाहयामि सर्वनागगणः स
र्ववृद्धाधिकारः सर्वत्रा चंगतथागतसंज्ञमहासंज्ञमिष्टं ननु वर्षत हजं वृद्धी पलाहा ॥ सर्व
वृद्धाधिकारसंज्ञसिद्धिमुक्तं पदा ॥ निष्ठाहा ॥ ॥ नृपसत्त्वजपा निमहासुषुकाधिप
तिप्रियं मुदाय ॥ यदि समपन्ननिष्ठुति कृत्तनक्रोधसहितनजपत ॥ ॐ धृक्ठ २ नृमृकयद्
लीङ्गीः उं ईं रुठ ॥ कृत्तनक्रोधसहितनसहसंज्ञपत ॥ श्री घं मागक गियति नागक गि नृकि
मूर्ध्नि रुठ गितरु का प्रियत ॥ नृवमहात्रयके पतंति ॥ नृपक्रोधजपडा गजु लोका
कर्षयत ॥ नृपयद्गनी मदा ल कलं र वंति ॥ सकलतत्रयानि कृत्वा मध्यमां गुत्पा पन्नपि
यत्नसितं ॥ नृनामिकागर्जनी बा फू ल व स्थप्यत ॥ तर्जनि नृसुनिधेयकनिष्ठगर्हसं
या

मः ५
सं ५
१०५

सिमा ॥ सर्वयक्षिनीनां पत्रमंडा ॥ न न न या व द र्क मा गु या सर्वयक्षिनी मा ग रू ति ॥ अस्मा न
व मंडा या दक्षि लं गु ष्ट ना वा ह ना ॥ ॐ ह्रीं नारायण रय द्धि ली मा वं प न ना ग म ना य सा हा ॥
सर्वयक्षिनी नामा रि मू र्खी क र्ण मंडा ॥ ॐ महायक्षिनी नां मे प न पि या य ई रू र सा हा ॥ सर्व
यक्षिनी नामा रि मू र्खी क र्ण मंडा ॥ ॐ महायक्षिनी नां मे प न पि या य ई रू र सा हा ॥ सर्वय
क्षिनी सा नि ध्यं क न त्री य सा हा ॥ ॐ का म रा ग न त्री य सा हा ॥ सर्वयक्षिनी नां हृ द य मंडा ॥
ॐ सर्वमना हा त्रि त्री य सा हा ॥ अथ ना ग ना जा तु ल्या य त स्मि न्य र्ष नं लु ल ॥ जी व ज च त्र स पा
दो जि त सा रि वं दि ता स्व हृ य म दा ऊ प त् ॥ ॐ ह ॥ अ नं त मू र्खी ॥ ॐ ह ॥ क र्क ष क मू र्खी ॥
ॐ ह ॥ प र्म मू र्खी ॥ ॐ ह ॥ अ ह ॥ महा प र्म मू र्खी ॥ ॐ ह ॥ श्री ह ॥ वा स कि मू र्खी ॥ ॐ ह ॥

७३
१०५

[illegible]

मः पु
सुति
१०६

श्री गत्वा ऋषु सहस्रं जपत् ॥ ऊपास्य मरुतामील प्राण न गृहीता नागकृति ॥ यत्स मया किं कर्तव्यं साध
केन वक्तव्यं ॥ माशरय सुति आवमनामस्य वस्त्रालं काल हाउ नादीनि दिने २२ ददाति ॥ पंचदिनायापु
यकृति ॥ सर्वनिज वसुषं वय कर्तव्यं ॥ यदि किं वापि स्थपयति नरुयारवति नाश्री गत्वा ऋषु सह
संजपत् ॥ आद्यनागि आगकृति आगस्य कामपितया रायारवसति ॥ नृक्षदिना नां प्रयकृति ॥ सर्व
निज वसुषं वय कर्तव्यं यदि किं वापि स्थपयति ॥ नरुयारवति नाश्री गत्वा ऋषु सहसंजपत् ॥ आद्यना
गि आगकृति ॥ आगस्य कामपितया रायारवसति ॥ नृक्षदिना प्रयकृति सर्वनिज वसुषं वय कर्तव्यं ॥
यदि किं वापि स्थपयित ॥ नरुयारवति ॥ नाश्री नदी संगमं गत्वा ऋषु सहसंजपत् ॥ ततो ऊपास्य नागक
यायागकृति ॥ आगतायाः सुवर्त्मय पृथं निजस्थ नंदापयत् ॥ नृक्षदिना रायारवसति दिव्य वस्त्रालं

७२
१०६

कालराजनादिददाति॥ नृधनागिनीसमयमंक्रानिरवति॥ ॐः आः हूंः आगकनागीनाहू॥ आवाहना
मंक्र॥ ॐ हूं हूं॥ गीधपुष्पमंक्र॥ ॐ हूंः आ॥ धपायामंक्र॥ ॐ हूंः हुं हूंः वाहू॥ सर्वनागीसमयमंक्र॥
ॐ हूंः गक २ गीधपुष्पनागमनायसाहा॥ विगर्जनमंक्र॥ नृधमृदालकनंरवति॥ उक्रानमंक्र
लिकृत्वाउत्थायांगुल्यः निषरयाकात्रलयाजयगातजयगातर्जनीनयसंगगावानांगुक्षारगो
नागिनीसमयमृदासर्वकृत्सर्वकर्मिकमावाहसमयविसर्जनमृदा॥ वामदक्षिणमृद्विकृत्वापृथ
कपृथकनिष्ठांनयध्वजनाकुम्भसखागुलिप्रहालधानागिनीसमयमृदाः सर्वनागसकप्रिमंक्र॥
नृधवज्रपालिमहागुक्काधिपतिजाधकजमृत्युदमंक्रमृदात्रयतु॥ ॐ नीलवर्णवर्जहूं नृः
ॐ हूं नृकनागिनीमाकर्षयहूं हूं साहा॥ नृवासिं नृराधितमागुलसर्वनागिनीमृद्विगापतिगासिः

पं: ७
सुं: ११
१०७

जगत्प्रसिद्धयत ॥ ननु यादिकुमिलगीचमालिरुतावमहान्नकपतति ॥ अथ हरागवान् वज्रध
वापर्वनां उल्लसकिन्नरीनाह्लाधिपतिरुत्थयरागवन्तुः ॥ गीवज्रधनस्य पादोभिन्नसावदित्वा सह
दयमंडारजत ॥ ॐ मना हात्रिलीयसाहा ॥ ॐ सुरारासाहा ॥ ॐ विमलभगुयसाहा ॥ ॐ सवेग
प्रियसाहा ॥ ॐ सुमुखसाहा ॥ ॐ दिवाकनमूषीयसाहा ॥ अथ किन्नरीनाह्लासाधनविचिवित्तना
रुवंति ॥ पूर्वतमर्द्धिगत्वा अथ सहस्रजपत ॥ अथ किन्नरीजपत ॥ सनागेमहतिप्रजाकृतारम
मासनगुलसमन्वितनधपयतलावजपतयावर्द्धजातुलनियतमागच्छति ॥ तस्यानरकव्यं
राशसाधकमाहापयसिः साधकनवकव्य ॥ एवमस्माकं रायतिवस्यति ॥ एवमस्माकं देवलोका
पिबनयति ॥ दिव्यकर्मिकराजनददाति ॥ अथ हरासाधनरुवंति ॥ पूर्वतलविहालवागत्वा

७३
१०७

एतत्तु पञ्चपांगस्य यदवीका मलसुत्रसादवपुवचत्रगतिभीपुका मयीतव्यां राय्यरवति॥ नष्टोदि
नायां राय्यरवति॥ नदीकूलगत्या नृयत्तु पत्त॥ पुनस्तकलाजाती ऊपत्त॥ पुलागनियतमागक
ति॥ जागतायां राय्यरवत्ति॥ दिनदिनपंचदिनार्कददाति॥ ॥ ॐ निसर्वतभागतो श्रीष
सिगारुपुगुनामापजतिमहापुष्टिगिजायां षड्विंशती साधनविधिर्विस्तृतं नाम मल्लानसंरात्र ८ ॥
नृधरगवन्वडधनमाह॥ कृत्स्निं नृखलपुनः सरतिनाम वाधिसत्त्वानां महापुष्टिगिजायां निर्दि
ष्टनिर्दिष्टमात्रदादभननामयत्तानां देवमानुषाकाया॥ पुजायां नृपतिर्ह्येकधर्मकातिपुतिल
लारुत॥ तस्मात्तपि वृद्धानां रागवता समगदि कूलोकधनुषं मीमहापुष्टिगिजायां वाधिसत्त्वानां
महासत्त्वानां राधमानामसंख्या नामपत्रिमानां सत्त्वानां महामनूर्ह्यायां सम्पत्तिं वाधेर्विहू
ष

मः पु
संमि
१०८

न्यस्यन्नात्रि॥ ॥ ॐ नमो ह्यस्तुति जाया मार्गनिवा ॥ पुर्णिपतिविपुलाः सर्वाकाजहन्ता विनाल ॥
अथ यत्र यस्मिं त्रिसाहस्र महासाहस्र लोकान् तु महाजाजात्रस्तु सर्वजनकेदवपुत्रसहस्रेः साङ्ग
उवपपिषदि सन्निपतिता जहन्वन् ॥ ७४ ॥ अथ जकादवानामिदं दायामा तुषितां नानिर्मालत्रनिनापत्र
निर्मितवसयस्त्रीनां यावद्दावास्तकायिका अदवपुत्रा लंकर्मविपाकजः कायावरासः सर्व
भागगपुर्णिपुण्यां सर्वतमिमपिकाना नोपेक्षिं सहस्रगमीमपिकाठी गतसहस्रगमीमपि
संख्या मपि कलामपि गगनामप्यपनिपदिमपि नोपेक्षिं न कर्मन भागगपुण्याः पुत्रत्रसादेवाना
पुत्रान् भागगपुण्यां गमयन्त ॥ ७५ ॥ अथ यत्र पुत्रा पुलीना जन्तू जडर्तु जावाख्यायत ॥ ७६ ॥
पिनामजं वनदस्य सुवर्णस्य पुत्रगृह्णन्तां न त्रलज्जननपतिन विशाचननपतिन विवाचः

७३
१०८

न तथ गगनपुर यग वी ज्ञा द्या धन क्षुधा वं जापु व जापु लीगा ज्ञान् रु जा द्या यत ॥ ॥ ॐ निमर्वत
न तथ गगन महापु यं गि जायी धम मी क जल ला दे वानी ॥ ॥ मथ यत्न म ऊ दे वा ना मि न्द ना य् धम सु
रु नि म न्द वा च न ॥ ॐ न रु उ न्द सु रु नि म हा वा धि स त्व गि सा ह सु म हा सा स दे वा सा य सिं धा या
मा तु धि ना निर्मा ल प्र न यः पत्र निर्मि न व स व र्क म् आ दे वा गु द्वा वा स ना धि का दे व पुं जा सिं सर्व स न्नि
प ति ना ना य् धम न्द सु रु नि म हापु यं गि जायी नि र्द म गु व धा य म हापु यं गि जा द म ॥ ॐ तु कामा
क थं र द न्द सु रु न्द महा वा धि स त्वा न्म हापु यं गि जायी स्थ न र्थ क त मा च वा धि स त्व स्य म हा स त्व
स्य म हापु यं गि जायी मि ति या ग्ध ना ॥ ॐ व म् के ना य् धम न्द सु रु नि म हा वा धि स त्वः न क दे वा ना मि
न्द म न्द वा च न ॥ न न हि को सि क उ प दे का मी व द्वा न्द ला व न्द वा धि स त्वा ना म हा स त्वा ना म हापु

मः ७
प्रति
१०८

संति प्राया यथा वाचि सत्वा नीम हा सत्वा नाम हा प्र सति प्राया स्थगव्य ॥ यच्च दवपूजे जन्तु प्रायां सं
मय क्व वाचो विरुं प्रात्यादि न मे जन्तु प्रायां सम्पक्व वाचो विरुं मत्पादयितव्य ॥ यच्च न जवजा कनि
यामाः न जपुति वला न्नु प्राया सम्पक्व वाचो विरुं मत्पादयितुं ॥ तत्तत्पहताः वज्रसिमा प्राहित संसा
न स्नातसु ॥ ॐ नमो हा प्र सति प्रायां कवि तु म्भु का नियम ॥ ॥ अपि तु खलु प्र नः नषा
प्यन्मा दत न दत तु दन्तु प्रायां सम्पक्व वाचो विरुं मत्पादयितुं ॥ ॐ नमो हा प्र सति प्रायां समया प्रितुया
फिः ॥ नो हन्त पा जल जल क न प्राय क प्रा मि ॥ ॐ नमो हा प्र सति प्रायां वि निष्ठ स्या वि निष्ठ त मा धर्मा ज्ज
ल विनया ॥ ॐ नमो हा प्र सति प्रायां मि तु का नि ष्ठा मी क ज ल दानि ॥ तत्तु को नि क वाचि सत्त्व महा सत्त्व क न
मा म हा प्र सति प्राया मि ह वाचि सत्त्व महा सत्त्व सवह्म ता प्र ति संयुक्ते चि ह्ना त्यादिः रूप म नि प्र

७७
१०८

नामनसि कथा नि ३४ स्वता नात्मन ॥ अकता जागता यलुतः मल्यता इद्यतः पत्रतः पुलापधर्मत
भवत ॥ पुरं गुजता रुयत उपसर्गित उपदवता मनसि कथा नि तच्चात्र पत्ररथा गुनवदना सहा
सहा जाविहान ॥ उवचकुरु मरुता लजि का काया मन ॥ उव पृथिवी अतु जच्चा तु सुजा अतु वायु
अतु जा का अतु विहान अतु निरुता मनसि कथा नि ॥ ३ः स्वता नात्मनः अकता जागता यलुतः
मल्यता इद्यतः पत्रतः पुलापधर्मत भवत पुरं गुजता रुयत उपसर्गित उपदवता मनसि
कथा नि तच्चात्र पत्ररथा गुन सर्वरुता पुति संयुक्त न विहाना दन ॥ उव मविहान पुत्य सहा जा
म निरुता मनसि कथा नि ॥ ३ः स्वता नात्मनः अकता जागता यलुतः मल्यता इद्यतः पुलापध
र्मत भवत ॥ पुरं गुजता रुयत उपसर्गित उपदवता सहा ज पुत्य विहान विहान पुत्य नाम उप ४

मः
पु
११०

नामरूपप्रत्यय ॥ अथ यत्नप्रत्ययसंस्थानप्रत्ययवदनावदनाप्रत्ययात्पुष्पप्रत्ययामपादान
प्रत्ययारवप्रत्ययाजाति ॥ जातिप्रत्ययाजनामत्रलक्षणकपत्रिदवइ ४ एवमनस्थापायासा ॥ एवमिति ॥
अथमस्यकेवलसमहताइ ४ एवमंधस्यसमूहधारवमिति न चान्नपलरथागुननिष्ठाइ ४ एवता
अनात्मता ॥ अकतागतागंलुत ॥ अत्यताः घनः पत्रतः प्रसापधर्मतन्त्रत ॥ एतं गुनताएवतु
पसर्गतुपडवतामनसिकताति न चान्नपलरथागुनसर्वज्ञताप्रतिसंयुक्तनचिह्नत्वादनजदि
यानिनाधसंस्कारनिनाध ॥ १००० निमनसिकतातिनिनाल्लत ॥ अकतापि विकृतः पुन्यताः अनिमित्त
रूपलिहितजरिससंस्कारत ॥ संस्कारनिनाधविज्ञाननिनाधनामरूपनिनाध ॥ नामरूपनिनाध
त्वतायतननिनाधः अदायतननिनाधसंस्थाननिनाध ॥ संस्थाननिनाधः अदनानिनाधतवदना

११०

नित्राधः नृ^{कु} नित्राधः नृ^{कु} नित्राधः इपादाननित्राधः उपादाननित्राधः हवनित्राधः रुवंनित्राधः
जातिनित्राधः॥ जातिनित्राधः ऊजामत्रल^{कु} कपनिधयइ ४ य दो मनसापायासनित्राधः॥ उव
मस्यकवयस्यमहतीइ ४ य स्क^{कु} स्पनित्राधः रवंति॥ नवनित्राधः गतगाविविकृतः मुन्यगाज
निमीन^{कु} ; ऊपुलिहितता नृरिसकाजतामूनसिकयातिनत्राधः पलरयागुनसवहुतापुतिसंय
केमनसिकाने॥ पुनत्रपत्रकोजिकवाधिसत्यमहासत्येः सवहुतापुतिसंयके॥ नचिर्लुवतानिस
पुपस्त्रनानिरावयतिन^{कु} पलरयागुन॥ उवयत्तात्रिसम्यकपुहल^{कु} निचतुजजडिपादानी
पथदियानी पंचवतानिसकवाधः ५ नित्राधः षागमागविचत्ताय्यपुमानानी चत्ताय्यधना
निचतसः आनृपसमापतिद^{कु} गत^{कु} हवतानी चत्तालिदे^{कु} नया निचतसपुतिसंविदाः

मः ७
संज्ञा
१११

छादयन् धर्माणां वयंति ॥ सर्वज्ञा पुनिसंयुक्तेन सिद्धात्सु ज्ञानपलम् धारुण ॥ प
नत्र पत्रकोत्तिकवाधिसत्तामहासत्ता सर्वज्ञा पुनिसंयुक्तेन चिह्नात्पादनदानपात्रमिगायां चत्र
नितवान् पलरुथा गुण ॥ ७ सर्वज्ञा पुनिसंयुक्तेन चिह्नात्पादनः गीलपात्रमिगायां कानि पा
त्रमीगायां वीर्यपात्रमीगायां ॥ न पात्रमीगायां ॥ ७ ह्यपात्रमीगायां नवान् पलरुथा गुण ॥ प
नत्र पलका निरुद्धाधिसत्तामहासत्ताः महापुत्रा गिगायां चत्रवेव धर्मे लधर्मथा ऊयंति ॥ ७ वध
मलधर्मनिरिष्यन् यत्रिष्यन् यत्रिष्यन् ॥ पुत्रयव कनिजात्मका धर्त सर्वधर्मा गिलासीय
विगताः नत्कस्य हता सुप्रहियवाधिसत्तामहासत्तास्य कृमलमलचिह्नं नवाधिविह्नं नासमव

७२
१११

हिनं यत्पत्रि लमनाचिरुं वाधिचिरुं कलमूलचिरुं सप्तमवहितं यवाधिचिरुं तत्सप्तपत्रि
लमनाचिरुं नासप्तमवहितं तत्सप्तमवहितं यत्कोशिकवाधिचिरुं तत्पत्रि लमनाचिरुं न सर्वधिच
तनापलसप्त यत्पत्रि लमनाचिरुं तत्वाधिचिरुं न सर्वधिच तनापलसप्त ॥ १० ॥ यत्कोशिकवाधिसत्त्वस्य
महासत्त्वस्य महापुल्लिजायां उर्वसर्वधर्माश्च पुन्यवद्गतेन जवधर्ममरिचि विभक्तिनापल
सप्त ॥ ११ ॥ उर्वमूकं कृदवानामिन्दस्य विजसुत्तुगिमतदवाचत् ॥ ॥ कथं हर्तुं तत्सुत्तुगिपत्रिना
मनाचिरुं न तत्वाधिचिरुं नापत्रि लमनाचिरुं नासप्तमवहितं कथं वापत्रि लमनाचिरुं न तत्वाधि
चिरुं न सर्वधिच तनापलसप्त ॥ कथं वाधिचिरुं पत्रिनामनाचिरुं न सर्वधिच तनापलसप्त ॥ महा
वाधिसत्त्वमाहुः ॥ यत्कोशिकपत्रि लमनाचिरुं कृदचिरुं यवाधिचिरुं दचिरुं नहि कृदचिरुं वाचिरुः

वरुगत्रस्मादित्रपिवाधि सत्त्वा महासत्त्वः षट् स्रपात्रमितासुवदिनव्यं जन्मसितव्यासंदर्भयित
व्याः समादापयितव्याः समूहोत्थयितव्याः संप्रहर्षयितव्या निवेजयितव्या ॥ पुनिष्ठापयितव्या ॥ अ
स्मादित्रपिवाधि सत्त्वा महासत्त्वा जववादिनगा जन्मभिष्ठा ॥ संदर्भिता समूहोत्थिताः संप्रहर्षिता ॥
समादापिता निवेजिता ॥ पुनिष्ठापिताः जन्मरूपाया सम्यक्वाधिमहि संरात्स्यता ॥ ॥ अथ
त्वा यस्मिन्सूत्रेण शुद्धदवात्रा मित्रुभित्तदवाचन ॥ तत्र हि को गिरु गन्तुसाधसुखवमनसि कुत्ररा
विषययथावाधि सत्त्वे नमहा सत्त्वेनमहाप्रसूतित्रायास्थानव्ययथापुतिपत्न्ययथापुतिपत्न्य ॥
नृपवदनासूत्रा सत्त्वात्र विज्ञानशुभ्य ॥ वदुःशुभ्यलजिज्ञासायमनशुभ्य ॥ नृपवदनाशुभ्य
सत्त्वमधर्मशुभ्य वदुः विज्ञानशुभ्य विज्ञानशुभ्य विज्ञानजिज्ञासाय विज्ञानमना विज्ञान

सर्वधर्मभुन्यताः सलक्ष्मणभुन्यताः जन्मपल्लवभुन्य ॥ जलवभुन्यताः सलक्ष्मणभुन्यताः जलवस्र
रावभुन्यताः भुन्यंस्मृष्टपक्ष्मनाभिसंयुक्तं हलभनिःश्रुतिपादानीहः न्दिया निवतानिवाक्यं
गमनीभुन्यं ॥ मार्गनिःश्रुतिपादानीहः न्दिया निवतानिवाक्यं
जन्मपूर्वविहाजसमापत्तुभुन्यताभिमिर्लुपुलिहितविभाक्ष्मणानीहः न्दिया निवतानिवाक्यं
मृण्मानीदधनभाजगवल्भुन्यं ॥ यत्नानिवेभ्यः यानिवतानिवाक्यं
कृत्वा जलवभुन्यताः सलक्ष्मणभुन्यताः जलवस्र
संपुष्टयकवाधिमागमकालकृताभुन्यं ॥ नृवं सर्वधर्माभ्यं महापुष्टं शिवायां यथाभिवलाक
यतिस्त ॥ पंचवर्षं च सलक्ष्मणभुन्यं यवलाकिनी ॥ ॥ जलवभुन्यताः सलक्ष्मणभुन्यताः जलवस्र ४

पः ७
पृष्ठ
११४

अस्या महापुत्रा गिराया वर्या कर्तुं कामातन क जिह्मि गयम् ॥ उवं मूक म हापु सु गिरा वाधिस
त्वाम हासत् ॥ आ यथा सूरुति म न वाचन ॥ यद्विद्वत्कलपुत्रा वाकल इति वा अस्या गहा नायां वर्या
कर्तुं कामसुते वय वला कयितव्यं ॥ पंचरुध सखा व भुन्य व वला कयितव्यं ॥ ॥ तद्यथा ॥ उपभुन्यं
भुन्यस्व उप ॥ न उपं पृथक् भुन्यतां भुन्यतां न भुन्यतां ॥ पृथक् उपं ॥ वेद ना भुन्या भुन्यते वेदना ॥
न वेदनायाः पृथक् भुन्यतां न भुन्यतायाः न पृथक् संज्ञाः संज्ञा न भुन्यते व संज्ञालान संज्ञायाः पृ
थक् भुन्यतायाः पृथक् संज्ञायाः ॥ विज्ञानं भुन्यते विज्ञानं न विज्ञानं पृथक् भुन्यतायां न पृथ
क् विज्ञानं ॥ उवं हउ क म हासूरुति सर्वधर्म सखा व भुन्या ॥ अल क ल अ नृत्य ना अनिरुद्धा
अमला विमला अनृत्य ना अ स पृ ॥ तस्माद् हि म हासूरुति भुन्यतायां न उपमृ वेदना न सं

७३
११४

[illegible]

मः पु
सं गि
११५

ॐ हूं ॐ हूं ॐ हूं व २ सर्व इच्छा न मम सर्व सत्त्वा नां च वक्तु पा लि हूं हूं हूं सा हा ॥ ॐ सर्वत भागता पू
ष सि गा तु पु ता ना मा प ज्ञा जि ता म हा पु सं गि ज जि ता पू ष न व ला कि न मूर्द्धि न जी जा भी ॥ ॐ हूं ल २
पु हूं ल २ द्या द २ ४ द २ द न २ विं द २ किं द २ हिं द २ हूं हूं हूं हूं न क २ मम सर्व सत्त्वा नां च स व म
भाग ता पू ष सि गा तु पु ता ना मा प ज्ञा जि ता म हा पु सं गि ज जि ता म हा वि द्या ज हूं हूं हूं सा हा ॥ ॐ सर्व सत्त्वा
नां च न क २ हूं हूं हूं सा हा ॥ न य भा ॥ न न २ न व ल २ द्या द २ वि ष द २ वी त २ वे त २ सो म्य २ म न २
पा न्द २ मम सर्व विद्या वि पत्त यः सर्व द्वा वि वि न सर्वत भागता पू ष सि गा तु पु ता ना मा प ज्ञा जि ता म हा पु सं गि ज जि ता म हा वि द्या ज हूं हूं हूं सा हा ॥ व द्या या न स र्वा प उ व ष्ठि उ काः क र्त्तव्या ॥ ॥ ॐ द म वा च न त ग वा न्
सर्व द्वा वि सत्त्वा म हा सत्त्व द व ग म क र्ग ४ र्वा सु न ग न् उ कि न न म हा न ग म न्द व म न्द व म न्द व

पु २
११५

[illegible]

पु
संज्ञा
११६

पु
११६

पुथा ३ सु॥ संवत् १०६४ सालः कार्तिक कृष्ण या॥ मृग मिथुन सप्तमि यदा कुल॥ लिखितं वृषाहा
लयाग्रे मृगश्वर वजावाया॥ श्रुति सिद्धि जातं कुरु अंगुलाया॥ सकल जाहान या धर्म विरुद्ध
या वायागुल॥ ननु ५५ सद्ध पाथ पाजा या नागु पृथ्वी ५५ गुरु नाया उत पुतु वरुन पृथ्वी भव
जात दा कीनी या दा निवात्र ५॥ विपु जीरु रुया वा सा पाथ या ना वि यागुली भव रुया उनी ४
आग ५५ कथा विमलानं भवि रुयी॥ ननु ५५ गुपु रुक रुना नका भव रुल पुन्य नात दय मः ५५
धर्मनं सत्य प्रालि उधाय रुय मां॥ ॥ ५५ सालं वृषाहात्र गीष्मा र्वी पाया॥ नमि पृजानं
वालं कुरु रुया॥ वं क्रिया गीष्मा र्वी ग मन उनागु॥ नकाद सि र्गु स्रुथ सिया चाल वल रुडा
ना॥ सिद्ध वल रुवडे सिद्ध य का उया रु॥ साल २००० साल ५५ रु साल ॥ श्री ५ माहात्रा उचिना उ।

पः ७
सं जि
११७

गिरवन्नविलविद्रुमाहात्राजवित्राजयायर्द्धसिद्धिकागुत्रागुनमिष्टजायात्राप्रिकागु॥
अहसालगं प्यायनं गमनअनागु ५ अक्षयाडात्रं मं
वाकपिहाअनादकनगमनअनागु इलंगुह॥ ॥ यरवावलया कागुनं अहसालगं प्याय
नवस२ पतिं चलयानागु॥

गु ३
११७

अश्विन मरुदाधि	
316	I

ASHA ARCHIVES